युगानुकूल

जून 2024 मूल्य 25 रुपये

नवरचना

विकास के अनुकरणीय मॉडल आपके द्वार

स्वावलम्बन के पथ को आलोकित करता

दीनदयाल शोध संस्थान

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

अब मिलेगी समय पर सहायता...

सड़क, औद्योगिक दुर्घटना और प्राकृतिक आपदा की स्थिति में **नि:शुल्क वायु परिवहन सेवा**

पीएमश्री एयर एम्बुलेंस सेवा

संचालन प्रारंभ

" हमारी सरकार प्रदेश की जनता को सर्वोत्तम स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराते हुए स्वस्थ मध्यप्रदेश के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए संकल्पित है। अब प्रदेश में गंभीर रोगियों को पीएमश्री एयर एम्बुलेंस सेवा के जरिए उचित समय पर बेहतर इलाज मिल सकेगा "

- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

योजना के बारे में अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : 9111777858

सशुल्क एयर एम्बुलेंस सेवा भी उपलब्ध, सम्पर्क करें : 0755-4092530

- आयुष्मान कार्ड धारक को प्रदेश व देश में कहीं भी इलाज हेतु शासकीय और आयुष्मान सम्बद्ध अस्पताल में नि:शुल्क सुविधा
- आयुष्मान कार्ड धारक न होने पर प्रदेश के शासकीय अस्पतालों में नि:शुल्क परिवहन सुविधा जबकि प्रदेश के बाहर निर्धारित शुल्क पर परिवहन सुविधा
- सड़कों या औद्योगिक स्थलों पर होने वाली दुर्घटना, हृदय रोगी या जहर से प्रभावित व्यक्ति को अब मिल सकेगा अच्छे चिकित्सा संस्थानों में समय पर इलाज
- अस्पताल द्वारा मरीज की स्थिति की गंभीरता की जांच के उपरांत मिल सकेगी एयर एम्बुलेंस की सुविधा

एयर एम्बुलेंस सेवा की अनुमति

- दुर्घटना प्रकरण में संभाग के अंदर जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी की अनुशंसा पर जिला कलेक्टर द्वारा
- दुर्घटना अथवा अन्य आपदा की स्थिति में संभाग के बाहर परिवहन हेतु स्वास्थ्य आयुक्त द्वारा
- दुर्घटना के अतिरिक्त अन्य गंभीर प्रकरणों में प्रदेश के अंदर संबंधित चिकित्सा महाविद्यालय के अधिष्ठाता की अनुशंसा पर संभागीय आयुक्त द्वारा
- प्रदेश के बाहर गंभीर रोगी या दुर्घटना पीड़ित आयुष्मान कार्डधारी होने पर संचालक चिकित्सा शिक्षा द्वारा
- सशुल्क परिवहन हेतु एन.एच.एम. कार्यालय स्तर पर अनुमति मिलेगी

- रोगी/पीड़ित को एयर एम्बुलेंस तक पहुंचाने के लिए संजीवनी 108 एम्बुलेंस होगी उपलब्ध
- एयर एम्बुलेंस सेवा में हृदय रोग, श्वास और तंत्रिका संबंधी बीमारियों, नवजात शिशुओं की स्वास्थ्य समस्याएं, उच्च जोखिम वाले गर्भधारण तथा आपदा की स्थिति को संभालने के लिये प्रशिक्षित चिकित्सक और पेरा मेडिकल स्टाफ रहेगा मौजूद
- हवाई परिवहन के दौरान रोगी/पीड़ित के लिए ₹ 50 लाख के दुर्घटना बीमा का प्रावधान

संस्थापक
नानाजी देशमुख

प्रबन्ध सम्पादक
अमिताभ वशिष्ठ

सम्पादक
राजेश दुबे

आवरण सज्जा एवं लेआउट
लक्ष्मी नारायण शुक्ला
अंशुमान सिंह
सतीश मालवीय

विशेष सहयोग
आशीष सक्सेना

प्रकाशक
अभय महाजन
दीनदयाल शोध संस्थान के लिए
7-ई, स्वामी रामतीर्थ नगर, रानी
झांसी मार्ग, झण्डेवाला एक्स.,
नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित
दूरभाष : 23526735
ईमेल : dridelhi@dri.org.in
info@dri.org.in

मुद्रक :
प्रितिका प्रिंटर्स
ए-21/27, नारायण इण्ड. एरिया
दिल्ली-110028

पृष्ठ सं. 5 :
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर चित्रकूट में नवाचार

पृ.सं. 7 चित्रकूट के जिला कारागार में महिला/ पुरुष बन्दियों को जन शिक्षण संस्थान ने कराया योग

पृष्ठ सं. 32
पोषक अनाज
"श्री अन्न" प्रदर्शनी

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर गांव-गांव हुआ 'योग शिविरों' का आयोजन 8
"हमारी भूमि हमारा भविष्य" थीम के साथ मना विश्व पर्यावरण दिवस 10
पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई होलकर का 300वां जयंती वर्ष, दीनदयाल शोध संस्थान के प्रकल्पों में ... 12
कृषि विज्ञान केन्द्र में मक्का उत्पादन की सम्भावनायें एवं उत्पादन तकनीकी पर कार्यशाला 13
बच्चों द्वारा विविध कलाओं के प्रदर्शन के साथ चित्रकूट में हुआ व्यक्तित्व विकास शिविर 14
आकार संस्था के 50 कलाकारों ने गीतरामायण की हिंदी प्रस्तुति से प्रशंसकों को रामायण काल 17
पादप आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन के लिए आईसीएआर-नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज.... 19
स्वावलंबन केंद्रों सहित मझगवां में मनाया वीरांगना रानी दुर्गावती का 461वां बलिदान दिवस 20
मौसम में "जलवायु परिवर्तन से कृषि में बढ़ती अनिश्चितता" के सन्दर्भ में कृषि विज्ञान केन्द्र.... 22
पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की 56वीं पुण्यतिथि 26
महिला सशक्तिकरण में स्वंसहायता समूहों की भूमिका विषय पर संगोष्ठी 35
यूएन के सतत विकास लक्ष्य..... 40
नानाजी देशमुख उत्कृष्ट कृषक सम्मान-2024 42
नानाजी की चौदहवीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि के साथ हजारों लोगों ने किया प्रसाद ग्रहण 44
... चित्रकूट में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोलर तकनीशियन लैब का किया लोकार्पण 46
11 लाख दीपों से जगमग हुआ चित्रकूट दुल्हन की तरह सजा रामघाट 53

आजीवन स्वास्थ्य के लिए योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पर विशेष जोर देते थे नानाजी

विगत 10 वर्षों से 21 जून को पूरा विश्व योग दिवस के रूप में मना रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के अथक प्रयासों से योग को विश्व मंच पर पहुंचाने का कार्य हुआ है। 21 जून 2024 को दुनियाभर में 10वां योग दिवस मनाया गया। इसका मकसद दुनियाभर के लोगों को हेल्दी लाइफस्टाइल के लिए मोटिवेट करना और योग व ध्यान के प्रति जागरूक करना है। हाल के दिनों में योग की लोकप्रियता दुनिया भर में काफी बढ़ गई है। यह दिन इसकी सार्वभौमिक स्वीकृति का जश्न मनाता है।

27 सितंबर 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) को संबोधित किया। अपने भाषण के दौरान उन्होंने प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा। प्रधानमंत्री मोदी जी ने योग के कल्याणकारी लाभों तथा स्वास्थ्य के प्रति इसके समग्र दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस उत्सव के लिए 21 जून को आदर्श तिथि बताया, क्योंकि यह कई संस्कृतियों में महत्व रखती है। इस प्रस्ताव ने गति पकड़ी और संयुक्त राष्ट्र ने दिसंबर 2014 में एक प्रस्ताव पारित कर आधिकारिक तौर पर 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित कर दिया। वहीं, रिकार्ड तोड़ 175 सदस्य देशों ने प्रस्ताव का समर्थन किया।

संयुक्त राष्ट्र ने उल्लेख किया है: "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की स्थापना के लिए मसौदा प्रस्ताव भारत द्वारा प्रस्तावित किया गया था और रिकॉर्ड 175 सदस्य देशों द्वारा इसका समर्थन किया गया था।" यह प्रस्ताव पहली बार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महासभा के 69वें सत्र के उद्घाटन के दौरान अपने संबोधन में पेश किया था, जिसमें उन्होंने कहा था: "योग हमारी प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। योग मन और शरीर, विचार और क्रिया की एकता का प्रतीक है... एक समग्र दृष्टिकोण, जो हमारे स्वास्थ्य और कल्याण के लिए मूल्यवान है। योग केवल व्यायाम नहीं है; यह स्वयं के साथ, विश्व के साथ और प्रकृति के साथ एकता की भावना की खोज करने का एक तरीका है।"

प्रस्ताव में कहा गया है कि "व्यक्तियों और आबादी के लिए स्वस्थ विकल्प चुनना और अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाली जीवनशैली का पालन करना महत्वपूर्ण है।" इस संबंध में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी अपने सदस्य देशों से अपने नागरिकों की शारीरिक निष्क्रियता को कम करने में मदद करने का आग्रह किया है;"।

21 जून को ही योग दिवस क्यों मनाया जाता है? इसके पीछे की मुख्य वजह ये है कि, 21 जून को उत्तरी गोलार्द्ध का सबसे लंबा दिन होता है, जिसे लोग ग्रीष्म संक्रांति भी कहते हैं। भारतीय परंपरा के मुताबिक, ग्रीष्म संक्रांति के बाद सूर्य दक्षिणायन होता है। माना जाता है कि सूर्य दक्षिणायन का समय आध्यात्मिक सिद्धियां प्राप्त करने के लिए फायदेमंद है। इसी वजह से 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाने लगा।

योग ने हमें वो तकनीकें सिखाईं जिनके जरिए हम आगे बढ़ सकते हैं। इससे हम अपने प्राण और आभा को शुद्ध कर सकते हैं और बंद चक्रों को खोल सकते हैं। वास्तव में अगर योग आसन को ठीक से किया जाए, तो बीमारियों से छुटकारा पाने और सांस लेने में बहुत मदद मिलती है। योग हमारी एकाग्रता में सुधार करने के लिए जरूरी है। योग विशेषज्ञों के अनुसार, रोजाना 30 मिनट का योगाभ्यास शरीर को दुरुस्त रखने के लिए आदर्श माना जाता है।

इस दृष्टि से चित्रकूट में दीनदयाल शोध संस्थान एवं सभी मठ-मंदिरों, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्थाओं सहित नगरवासी एक साथ सामूहिक रूप से मिलकर 21 जून को योग क्रियाऐं करते हैं। उसके पूर्व नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रों के कई केंद्रों पर योग का अभ्यास किया जाता है। हर वर्ष सभी संस्थाओं के सामूहिक विचार-विमर्श से अलग-अलग स्थानों पर योग क्रिया की जा रही हैं। 'भारत रत्न' राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख आजीवन स्वास्थ्य की दिशा में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पर विशेष जोर देते थे। उनका मानना था कि योग वह क्रिया है, जिसे अपनाकर व्यक्ति जीवन भर निरोगी रह सकता है। इसी दृष्टि से नानाजी ने आरोग्यधाम में अलग से योग प्रकल्प तैयार किया, और उसी क्रम में योगाभ्यास का यह आयोजन ज्यादा से ज्यादा स्थानों पर हो सके, इसके लिए सभी के सार्थक प्रयास से चित्रकूट क्षेत्र में 100 से अधिक केन्द्रों पर योगाभ्यास किया गया।

योग दिवस के लिए चित्रकूट में जो स्वरूप तैयार हुआ उसमें अब गांव के लोग भी अछूते नहीं रहे। दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा ग्रामीण स्वावलम्बन केन्द्रों पर भी योग की बात पहुंच सके इसके लिये अपने समाज शिल्पी दंपत्ति कार्यकर्ताओं के सहयोग से दिनांक 12 जून से सभी स्वावलंबन केंद्रों पर योगाभ्यास किया गया। रोजाना सुबह प्रशिक्षित प्रशिक्षकों द्वारा योग की सभी क्रियायें एवं आसन कराये गये। चित्रकूट क्षेत्र के स्वावलम्बन केन्द्रों एवं सम्पर्कित ग्रामीण केन्द्रों पर ग्रामवासियों की भागीदारी के साथ योग के इन प्रयोगों को नियमित रूप से अपनाने व दिनचर्या में शामिल करने का आग्रह किया गया। ताकि प्रत्येक घर तक योग का संदेश पहुंचे और जो योग हमारी प्राचीन जीवनशैली का हिस्सा था, वह फिर से हमारी दैनिक दिनचर्या में शामिल हो सके।

– अमिताभ वशिष्ठ

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर चित्रकूट में नवाचार

चित्रकूट की संस्थाओं के साथ-साथ संत, महात्माओं ने किया योगाभ्यास

बच्चों, युवाओं, बुजुर्गों सहित बड़ी संख्या में मातृशक्ति भी योग में बनी सहभागी

चित्रकूट 21 जून 2024/ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सामूहिक रूप से महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय में विशाल योग कार्यक्रम एक नवाचार के रूप में संपन्न हुआ। इस मौके पर संत, महात्माओं, महंतों, चित्रकूट क्षेत्र में कार्यरत सरकारी, अर्ध सरकारी, गैर सरकारी, विकास, शैक्षणिक संस्थाओं के पदाधिकारी, कार्यकर्ताओं, प्रशासन और चित्रकूट अंचल के निवासियों ने मिलकर सामूहिक योगाभ्यास का अभिनव प्रदर्शन किया।

योग के इस विशाल कार्यक्रम में दो हजार से अधिक लोगों ने सहभागिता की। दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव एवं महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय की प्रबंध मंडल के सदस्य श्री अभय महाजन इस विशेष आयोजन के प्रमुख सूत्रधार रहे। ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो भरत मिश्रा की संस्थागत अगुवाई में संपन्न इस योग कार्यक्रम में पूरे उत्साह एवं योग अनुशासन के साथ सहभागियों में संधि योग, ॐ उच्चारण, आसन, सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, संकल्प आदि का अभ्यास किया। कार्यक्रम का शुभारंभ खेल परिसर में बनाए गए योगासन मंच में भारत माता के तैल चित्र पर संतोषी अखाड़ा के महंत राम जी दास, दिगंबर अखाड़ा के महंत दिव्य जीवनदास, जानकी महल के महंत सीता शरण दास, गायत्री शक्तिपीठ के प्रमुख डॉ. रामनारायण शास्त्री, दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन, सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के प्रमुख ट्रस्टी डॉ. वी.के. जैन, सीएमओ विशाल सिंह एवं कुलसचिव नीरजा नामदेव द्वारा किए गए माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन से हुआ।

तत्पश्चात् सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के योग शिक्षक डॉ. तुषार कांत शास्त्री ने योग, आसन, प्राणायाम कराया। दीनदयाल शोध संस्थान के दशरथ प्रजापति ने सूर्य नमस्कार कराया। संपन्न गतिविधियों की श्रृंखला में संधि योग, संधि चालन क्रिया, ताड़ासन वृक्षासन, त्रिकोणासन,भद्रासन, भुजंगासन सेतुबंध आसन, पवनमुक्तासन, शव आसन,

कराया गया। सूर्य नमस्कार अभ्यास के बाद प्राणायाम, अनुलोम विलोम, कपाल भाती, भ्रामरी प्राणायाम का अभ्यास कराया गया। अभ्यास के दौरान मुख्य मंच से निर्देशन कर रहे योग प्रशिक्षकों के अनुशासन एवं मार्गदर्शन संबोधन के दौरान योगाभ्यासियों को आसन, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार से होने वाले लाभों एवं सावधानियों का वर्णन भी कर रहे थे। स्वयं के लिए योग, समाज के लिए योग के सामूहिक संकल्प का वाचन भी किया गया।

इस अवसर पर ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो भरत मिश्रा ने सामूहिक योग कार्यक्रम के लिए आए लोगों का स्वागत करते हुए कहा कि प्रसन्नता का विषय है कि इस विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलाधिपति भारत रत्न राष्ट्रऋषि नाना जी देशमुख की भावना के अनुरूप चित्रकूट के लोग ग्रामोदय विश्वविद्यालय में योगाभ्यास के लिए एकत्रित हुए हैं। ग्रामोदय विश्वविद्यालय अपनी स्थापना काल से योग की अकादमिक गतिविधियां निरंतर संचालित कर रहा है। कुलगुरु प्रो मिश्रा ने ग्रामोदय विश्वविद्यालय के अकादमिक विकास की चर्चा करते हुए विश्वविद्यालय द्वारा संचालित नवाचारों एवं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी महत्ता पर प्रकाश डाला।

सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के प्रमुख ट्रस्टी डॉ. वी के जैन ने कहा कि चित्रकूट की संस्थाओं द्वारा एक साथ एकत्र होना स्वयं में एक योग है। योग व्यक्ति और समाज के सामंजस्य पूर्ण कार्य संयोजन का विशिष्ट माध्यम है योग को अपनी दिनचर्या में अपना कर व्यक्ति और भी गतिशील बन सकता है। योग से प्रकृति एवं आध्यात्म के सन्निकट पहुंचा जा सकता है। चिकित्सीय दृष्टिकोण से समझाते हुए डॉ. वी. के. जैन ने स्वास्थ्य में योग के महत्व को प्रतिपादित किया। संतोषी अखाड़ा के महंत श्रीराम जी दास ने अपने आशीर्वचन में मानव जीवन में योग के महत्व को बताते हुए बताते हुए इसे नित्य दिनचर्या में शामिल करने का आवाहन किया। उन्होंने योग के लाभों के अनेक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि योग के माध्यम से व्यक्ति अपने और समाज के विकास में सार्थक योगदान कर सकता है।

सामूहिक योगाभ्यास कार्यक्रम के सूत्रधार दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव अभय महाजन ने पूरे विश्व में मनाई जा रहे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के महत्व को बताते हुए चित्रकूट में आयोजित होने वाले सामूहिक योग के इस विशेष कार्यक्रम के औचित्य पर प्रकाश डाला और कहा कि हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि भारत रत्न राष्ट्रऋषि नाना जी के संकल्प को यथार्थ का धरातल प्रदान करने में चित्रकूट की सभी संस्थाओं और लोग मिलकर जुटे हुए हैं। उन्होंने चित्रकूट में मिल जुल कर काम करने की संस्कृति को विकसित करने के प्रयासों के रूप में 21 जून को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम एवं रामनवमी को चित्रकूट गौरव कार्यक्रम को एक सफल कदम बताया। कार्यक्रम के मध्य ग्राम दर्शन पर बनाए गए सेल्फी पॉइंट में लोगों ने जाकर पूरे उत्साह के साथ अपनी फोटो खिंचवाई।

चित्रकूट के जिला कारागार में महिला/ पुरुष बन्दियों को जन शिक्षण संस्थान ने कराया योग

चित्रकूट/ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के दसवें संस्करण के अवसर पर जिला कारागार रगौली, चित्रकूट में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित तथा कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित जन शिक्षण संस्थान द्वारा महिला / पुरुषों को योग कराया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में अतिरिक्त जिला जज एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्रीमती नीलू मेनवाल, जेल अधीक्षक श्री शशांक पाण्डेय, जेलर श्री संतोष कुमार वर्मा, डिप्टी जेलर रजनीश सिंह, श्री चितरंजन प्रसाद श्रीवास्तव, श्री प्रमोद कुमार कन्नौजिया एवं सुश्री ब्रज किशोरी तथा कारागार चिकित्सक डॉ. रामानुजम मौर्य सहित जन शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री अनिल कुमार सिंह उपस्थित रहे।

इस अवसर पर श्री अनिल कुमार सिंह निदेशक, जन शिक्षण संस्थान ने कार्यक्रम के विषय में जानकारी देते हुए बताया कि सामूहिकता के भाव को समेकित करते हुए सामाजिक कार्यकर्ता श्री जानकी शरण, बहन पद्मा सिंह एवं कु. अनन्या सिंह के सहयोग से जिला कारागार में महिला/ पुरुष बन्दियों को आजीवन स्वास्थ्य की संकल्पना निरोगी रहने के दृष्टिकोण से योग का प्रशिक्षण यहाँ संचालित किया गया। जिसमें प्रशिक्षकों द्वारा सन्धियोग, आसन, मुद्राभ्यास, प्राणायाम, सूर्यनमस्कार सिखाये गए। क्योंकि योग शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक उन्नति तथा सकारात्मक ऊर्जा व शक्ति के लिए अति आवश्यक है। योग का अभ्यास हमारे शरीर और मन को अनुशासन सिखाता है। हम सभी इसे दैनिक जीवन में अपनाएं ऐसी सभी से अपेक्षा है।

सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्रीमती नीलू मेनवाल ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है" आजीवन स्वस्थ रहने के लिए योग हमारी वैदिक परंपरा का अमूल्य उपहार है जो हमें शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ एवं मजबूत रखता है। योग करने से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है हम सभी को इसे दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाना होगा। जेल अधीक्षक श्री शशांक पाण्डेय ने कहा कि सम्पूर्ण जीवन में योग ही ऐसा मार्ग है जिसके द्वारा मनुष्य को बल, बुद्धि, श्रेष्ठता, पौरुष, एवं सच्चरित्रता पाँच सर्वोत्तम गुण प्राप्त होते हैं। योग का एक ही मूल आधार है 'श्रेष्ठ जीवन का निर्माण'।

प्रशिक्षक श्री जानकी शरण ने कहा कि योग से बुद्धि तीव्र होती है स्मरण शक्ति बढ़ती है श्वसन तंत्र मजबूत होता है तथा ध्यान से मानसिक स्थिरता आती है।

श्रीमती पद्मा सिंह ने बताया कि योग शारीरिक और भावनात्मक दोनों पहलुओं पर काम करता है, जो जीवन की चुनौतियों से शांत और संयमित तरीके से निपटने में मदद करता है सभी को प्रतिदिन कम से कम 30 मिनट योग करना चाहिए। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं संयोजन जेलर श्री संतोष कुमार वर्मा तथा धन्यवाद ज्ञापन डिप्टी जेलर श्री रजनीश सिंह ने किया। योग दिवस पर कु. अनन्या सिंह द्वारा देशभक्ति गीत पर योगाभ्यास का सुंदर प्रस्तुतिकरण किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर गांव-गांव हुआ 'योग शिविरों' का आयोजन

निरोगी रहने के लिए नानाजी ने आरोग्यधाम में अलग से तैयार किया था योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा प्रकल्प

चित्रकूट क्षेत्र के 100 स्थानों पर चले शिविर में साधकों ने सीखी योग क्रियाएँ

चित्रकूट/ चित्रकूट क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 100 से अधिक स्थानों पर 2 हफ्ते तक योगाभ्यास किया गया। योगाभ्यास के लिए जो स्थान चिन्हित किए गए उसमें चित्रकूट क्षेत्र के सभी प्रमुख मंदिर, आश्रम एवं सामाजिक संस्थाएं, शैक्षणिक संस्थाओं सहित विभिन्न विभाग शामिल हैं, उपरोक्त स्थानों पर आरोग्यधाम में प्रशिक्षित प्रशिक्षकों द्वारा नियमित योगाभ्यास कराया गया।

पुरातन योग पद्धति को साकार रूप देने के लिये 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए जो स्वरूप तैयार हो रहा है। उसमें अब गांव के लोग भी अछूते नहीं है। दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट द्वारा ग्रामीण स्वावलम्बन केन्द्रों पर भी योग की बात पहुंच सके इसके लिये अपने समाज शिल्पी दंपत्ति कार्यकर्ताओं के सहयोग से दिनांक 12 जून से सभी स्वावलंबन केंद्रों पर योग किया गया। रोजाना सुबह प्रशिक्षित प्रशिक्षकों द्वारा योग की सभी क्रियायें एवं आसन कराये गये, चित्रकूट जनपद तथा मझगवां जनपद के स्वावलम्बन केन्द्रों एवं सम्पर्कित ग्रामीण केन्द्रों पर ग्रामवासियों की भागीदारी के साथ योग के इन प्रयोगों को नियमित रूप से अपनाने व दिनचर्या में शामिल करने का आग्रह किया गया।

योग प्रशिक्षकों ने प्राणायाम, मुद्राभ्यास, सन्धियोग, योगासन और सूर्य नमस्कार की सभी क्रियायें एवं आसन कराये, इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 21 जून को सामूहिक वृहद कार्यक्रम महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया। जिसके लिए प्रातः 5:45 बजे एकत्रीकरण रखा गया। उसके बाद प्रातः 6:00 से 7:00 तक योग की सभी क्रियाएं संपन्न हुईं। इस दौरान इस सामूहिक कार्यक्रम में चित्रकूट क्षेत्र में चल रहे सभी 100 योग केंद्रों से योग साधक इस अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सामूहिक कार्यक्रम में शामिल हुये। विगत 10 वर्षों से 21 जून को पूरा विश्व योग दिवस के रूप में मना रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के अथक प्रयासों से योग को विश्व मंच पर पहुंचाने का कार्य हुआ है। इस दृष्टि से चित्रकूट में दीनदयाल शोध संस्थान एवं सभी मठ-मंदिरों, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्थाओं सहित नगरवासी एक साथ सामूहिक रूप से मिलकर 21 जून को योग क्रियाऐं करते हैं। उसके पूर्व नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रों के कई केंद्रों पर योग का अभ्यास किया जाता है। हर वर्ष सभी संस्थाओं के सामूहिक विचार-विमर्श से अलग-अलग स्थानों पर योग क्रिया की जा रही हैं। दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि 'भारत रत्न' नानाजी देशमुख आजीवन स्वास्थ्य की दिशा में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पर विशेष जोर देते थे। उनका मानना था कि योग वह क्रिया है, जिसे अपनाकर व्यक्ति जीवन भर निरोगी रह सकता है। इसी दृष्टि से नानाजी ने आरोग्यधाम में अलग से योग प्रकल्प तैयार किया, और उसी क्रम में योगाभ्यास का यह आयोजन ज्यादा से ज्यादा स्थानों पर हो सके, इसके लिए सभी के सार्थक प्रयास इस दिशा में अपेक्षित हैं।

‘हमारी भूमि हमारा भविष्य’ थीम के साथ मना विश्व पर्यावरण दिवस

जेएसएस एवं केवीके चित्रकूट के संयुक्त तत्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित तुलसी कृषि विज्ञान केंद्र गनीवां एवं कौशल विकास व उद्यमशीलता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट के संयुक्त तत्वावधान में 5 जून को ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत विश्व पर्यावरण दिवस कार्यक्रम का आयोजन पंडित दीनदयाल उपाध्याय सभागार में समाज शिल्पी दम्पति प्रभारी श्री राजेन्द्र सिंह, श्री हरीराम सोनी, वरिष्ठ गृह वैज्ञानिक श्रीमती ममता त्रिपाठी, श्रीमती बबिता सिंह, जन शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री अनिल कुमार सिंह द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया।

श्री अनिल कुमार सिंह, निदेशक जन शिक्षण संस्थान ने कहा कि प्रकृति को प्रदूषण से बचाने के लिए पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। लोगों को प्रकृति के प्रति जागरूक करना और अपने वातावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए प्रेरित करना है। 2024 के लिए, विश्व पर्यावरण दिवस अभियान “हमारी भूमि हमारा भविष्य” तहत भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखे के लचीलेपन पर केंद्रित है। यह विषय दुनिया भर में पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा और पुनर्जीवित करने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करता है, जो ‘सतत विकास लक्ष्यों’ को प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

डॉ. मनोज शर्मा, मौसम वैज्ञानिक ने बताया कि प्रकृति की सुरक्षा करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है, हम लोग विकास के नशे और भौतिक सुख-सुविधाओं से प्रकृति के वास्तविक स्वरूप का विनाश करते जा रहे है, इसलिए प्रकृति के हो रहे दोहन को रोकना ही जीवन की सुरक्षा है। पेड़

लगाने के साथ साथ पेड़ों की सुरक्षा करना भी हमारी नैतिक जिम्मेदारी है जिससे जीवन स्वास्थ्य, समृद्ध एवं सुरक्षित हो सकेगा। यदि हम सब लोगों ने इस बदलती जलवायु के संकेतों को ध्यान में नहीं रखा तो यह गंभीर परिणाम दिखा सकती है।

समाज शिल्पी दंपति प्रभारी श्री हरीराम सोनी ने कहा कि हमें अपने प्राकृतिक संसाधनों और आवास के संरक्षण के लिए सही दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता है।

दीनदयाल शोध संस्थान के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र सिंह ने कहा कि हमारे वेद पुराण भी हमें प्रकृति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सदैव प्रेरित करते हैं। महर्षि वाल्मीकि ने भी स्पष्ट किया कि 'बिना प्रकृति संतुलन के कुछ भी संरक्षित नहीं रह सकता क्योंकि इस सम्पूर्ण जगत के अस्तित्व का आधार प्रकृति है।'

डॉ. ममता त्रिपाठी ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के अभाव में जीवन शून्य है। हम सभी अपने बच्चों, बुजुर्गों के जन्मदिवस एवं वैवाहिक वर्षगाँठ में कम से कम एक वृक्ष अवश्य रोपित कर उनका संरक्षण करें एवं उनको पुष्पित एवं पल्लवित करें। अपने आसपास न गन्दगी करें और न किसी को करने दें।

डॉ. दीपेश भारत मिश्रा, पशु वैज्ञानिक ने कहा कि जलवायु का परिवर्तन तेजी से देखने को मिल रहा है इस परिवर्तन का सीधा असर पशुओं की सेहत और उत्पादन दोनों पर पड़ रहा है। गर्मियों में बढ़ते तापमान के असर से पशुओं के वजन में कमी, दूध उत्पादन में कमी एवं नस्ल सुधार में कमी देखने को मिल रही है यदि ऐसी ही स्थिति रही तो भयावह परिणाम देखने को मिल सकते हैं।

डॉ. सतीश पाठक, वरिष्ठ शोध सहायक जलवायु परिवर्तन ने कहा कि गिरते भूमिगत जल स्तर को देखते हुए सभी लोगों को जिम्मेदारी के साथ जल संरक्षण की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है आगामी समय मानसून आने का है सभी लोग जिम्मेदारी के साथ वर्षा जल को खेतों, तालाबों, पोखरों एवं छोटे-छोटे बंधे बनाकर संरक्षण करने का कार्य करें जिससे भूमिगत जल स्तर संतुलित किया जा सके। कार्यक्रम के अंत में जन शिक्षण संस्थान के 50 लाभार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किये गए। कार्यक्रम को सफल बनाने में सहायक परियोजना समन्वयक श्री प्रभाकर मिश्रा, श्री बनारसीलाल पाण्डेय, श्री अंकुर त्रिपाठी कृषि मौसम पर्यवेक्षक, श्री आलोक कुमार प्रक्षेत्र प्रबंधक एवं समस्त कार्यकर्ताओं ने अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया। इस कार्यक्रम में 77 महिलाएं एवं 37 पुरुषों ने प्रतिभाग किया।

पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई होलकर का 300वां जयंती वर्ष, दीनदयाल शोध संस्थान के प्रकल्पों में हुआ आयोजन

वृहद् जनकल्याणकारी कार्यों के कारण देवी अहिल्याबाई होलकर को 'पुण्यश्लोक' की मिली उपाधि – श्री अभय महाजन

चित्रकूट-मझगवां/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा देवी अहिल्याबाई होलकर की जयंती (31 मई) के मौके पर उनको याद किया गया। डीआरआई ने अपने सभी प्रकल्पों में आयोजित कार्यक्रम में शामिल लोगों को उनकी महानता बताई। पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई होलकर की त्रिशताब्दी का यह वर्ष खास है। जिसके चलते दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा अपने चित्रकूट, मझगवां एवं गनीवां स्थित परिसरों में संचालित सभी प्रकल्पों में उनकी जयंती का कार्यक्रम उत्साह पूर्वक मनाया और सभी कार्यकर्ताओं एवं गणमान्य लोगों द्वारा उनके चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित किये गए।

कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां के सभागार में आयोजित कार्यक्रम के दौरान दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि 31 मई, 2024 से देवी अहिल्याबाई होलकर का 300 वां जयंती वर्ष प्रारंभ हो रहा है। उनका जीवन भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम पर्व है। ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले सामान्य परिवार की बालिका से एक असाधारण शासनकर्ता तक की उनकी जीवनयात्रा आज भी प्रेरणा का महान स्रोत है। वे कर्तृत्व, सादगी, धर्म के प्रति समर्पण, प्रशासनिक कुशलता, दूरदृष्टि एवं उज्ज्वल चारित्र्य का अद्वितीय आदर्श थीं।

उनका लोक कल्याणकारी शासन भूमिहीन किसानों, भीलों जैसे जनजाति समूहों तथा विधवाओं के हितों की रक्षा करने वाला एक आदर्श शासन था। समाज सुधार, कृषि सुधार, जल प्रबंधन, पर्यावरण रक्षा, जनकल्याण और शिक्षा के प्रति समर्पित होने के साथ-साथ उनका शासन न्यायप्रिय भी था। श्री महाजन ने कहा कि समाज के सभी वर्गों का सम्मान, सुरक्षा, प्रगति के अवसर देने वाली समरसता की दृष्टि उनके प्रशासन का आधार रही। केवल अपने राज्य में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण देश के मंदिरों की पूजन-व्यवस्था और उनके आर्थिक प्रबंधन पर भी उन्होंने विशेष ध्यान दिया। बद्रीनाथ से रामेश्वरम तक और द्वारिका से लेकर पुरी तक आक्रमणकारियों द्वारा क्षतिग्रस्त किए गए मंदिरों का उन्होंने पुनर्निर्माण करवाया। प्राचीन काल से चलती आयीं और आक्रमण काल में खंडित हुईं तीर्थयात्राओं में उनके कामों से नवीन चेतना आयी। इन वृहद् कार्यों के कारण उन्हें 'पुण्यश्लोक' की उपाधि मिली। संपूर्ण भारतवर्ष में फैले इन पवित्र स्थानों का विकास वास्तव में उनकी राष्ट्रीय दृष्टि का परिचायक है।

चित्रकूट के आरोग्यधाम परिसर में आयोजित कार्यक्रम में दीनदयाल शोध संस्थान के उप महाप्रबंधक डॉ. अनिल जायसवाल एवं डॉ. मनोज त्रिपाठी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। वहीं कृषि विज्ञान केन्द्र, मझगवां में प्रभारी डॉ. आर एस नेगी, श्री राजेन्द्र सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता श्री चूड़ामणि सिंह, वीरांगना दुर्गावती शोध समिति के पदाधिकारी उपस्थित रहे। जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट एवं पीली कोठी स्थित रामनाथ आश्रमशाला परिसर में भी देवी अहिल्याबाई होलकर की जयंती धूमधाम से मनाई गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र में मक्का उत्पादन की सम्भावनायें एवं उत्पादन तकनीकी पर कार्यशाला

मक्का से इथेनाल बनाने की प्रक्रिया एवं हाईब्रीड किस्मों के बारे में किसानों से हुई परिचर्चा

मझगवां/ दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंन्द्र, मझगवॉं में राष्ट्रीय तकनीकी दिवस के अवसर पर जिला सतना में मक्का उत्पादन की सम्भावनाएं एवं उत्पादन तकनीकी विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारम्भ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रणवीर सिंह, प्रगतिशील कृषक ग्राम इटमा-सोहावल, फेजन अनीकी आर.एस.एम. एडवांटा कम्पनी जबलपुर, श्री रुपेश गुप्ता टी.बी. एम.बायर कम्पनी जबलपुर, श्री नरसिंह यादव एम.डी.प्रभू सीड्स कम्पनी इन्दौर, श्री ओम प्रकाश सिंह, महाप्रबन्धक, इण्डो न्यूक्लीयर एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी, रोहनिया पटनी मझगवॉं की उपस्थिति में किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री सुनील सिंह प्रगतिशील कृषक देवीपुर ने पंण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी एवं राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. राजेन्द्र सिंह नेगी ने कार्यक्रम की रुपरेखा बताते हुए जिला सतना में मक्का उत्पादन की सम्भावनाऍ एवं उत्पादन तकनीकी विषय पर विस्तृत प्रस्तुतिकरण किया गया। डॉ. अजय चौरसिया, वैज्ञानिक सस्य ने मक्का की वैज्ञानिक खेती विषय पर प्रस्तुतीकरण एवं डॉ. अखिलेश कुमार जागरे ने मक्का की फसल में लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोगों के नियंत्रण के उपाय पर विस्तृत प्रस्तुतीकरण किया। इसके साथ ही फेजन अनीकी आर.एस.एम. एडवांटा कम्पनी जबलपुर द्वारा मक्का से इथेनाल बनाने की प्रक्रिया एवं महत्व व हाईब्रीड किस्मों के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई। श्री रूपेश गुप्ता टी.बी.एम. मक्का की हाईब्रीड किस्मों एवं खरपतवारनाशी विषय पर बायर कम्पनी के उत्पाद के बारे में बताया। श्री नरसिंह यादव एम.डी. प्रभु सीड्स कम्पनी, इन्दौर द्वारा मक्का की हाईब्रीड एवं उन्नतशील प्रजाति के बारे में जानकारी दी। श्री ओम प्रकाश सिंह महाप्रबन्धक, इण्डो न्यूक्लीयर एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड पटनी, मझगवां द्वारा मक्का से एथेनाल बनाने की प्रक्रिया पर चर्चा करते हुए बताया कि एक टन मक्का से 380 लीटर एथेनाल बनेगा। जिले में मक्का के उत्पादन एवं चुनौतियों को कृषि वैज्ञानिकों के समक्ष रखा जिस पर वैज्ञानिकों एवं कम्पनी प्रतिनिधियों द्वारा कृषकों से विस्तार से चर्चा कर समाधान किया गया। कार्यक्रम में 120 कृषक एवं कृषक महिलाओं की उपस्थिति रही।

बच्चों द्वारा विविध कलाओं के प्रदर्शन के साथ चित्रकूट में हुआ व्यक्तित्व विकास शिविर

शिविर में 112 ग्राम आबादियों के 250 बच्चों का हुआ एक साथ प्रदर्शन ● भारत की प्रकृति, संस्कृति एवं गौरव की रक्षा हेतु बच्चों ने प्रस्तुत किये कार्यक्रम ● विभिन्न स्तरों के बच्चों ने एक साथ रहकर व्यक्तित्व विकास के विविध आयामों को हंसते-खेलते सहजता और सरलता से सीखा समझा

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा विगत 24 साल से चित्रकूट में प्रतिवर्ष आयोजित हो रहे व्यक्तित्व विकास शिविरों के माध्यम से ग्रामीण अंचल के बालक-बालिकाओं में मानवीय, सामाजिक और वैज्ञानिक गुण विकसित कर उनकी प्रतिभाओं को निखारने का सराहनीय काम किया जा रहा है। बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने की दृष्टि से गुरूकुल संकुल में दिनांक 30 अप्रैल से 11 मई 2024 तक व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के 6 जिलों एवं चित्रकूट की 50 कि0मी0 परिधि के 112 ग्राम पंचायतों से 250 बालक-बालिकाओं (168 बालक एवं 82 बालिकाओं ने शिविर में सम्मिलित होकर संगीत (गायन-वादन-नृत्य), डम्बल, लेजिम, चित्रकला, कम्प्यूटर, घोष आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

शिविर का समापन दीनदयाल परिसर के विवेकानन्द सभागार में बच्चों की कलाओं के प्रदर्शन के साथ हुआ। शिविर का उद्घाटन 30 अप्रैल को हुआ था, जिसमें कक्षा 5 से लेकर 9 तक के 10 से 15 वर्ष की आयु के बच्चे सहभागी रहे।

शिविराधिकारी द्वारा शिविर आख्या का वाचन किया गया, शारीरिक प्रदर्शनों से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। अलग-अलग समूहों में शारीरिक प्रशिक्षक श्री राधेश्याम बाघमारे के नेतृत्व में लेजिम, योगासन, डम्बल, पिरामिड की आकर्षक प्रस्तुतियों ने सभी को प्रभावित किया। गीत की धुन पर योगचाप का प्रदर्शन तथा विद्या, आयु, प्रज्ञा, या, बल की वृद्धि के लिये सामूहिक सूर्य नमस्कार के साथ ताल से ताल, कदम से कदम, स्वर से स्वर मिलाकर सभी बच्चों ने डम्बल का प्रदर्शन किया।

मंचीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सर्वप्रथम गणेश वंदना की प्रस्तुति हुई। समापन समारोह के भव्य मंच से सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भारत की विविधताओं वाली एकात्म संस्कृति का दर्शन उपस्थित जनसमुदाय ने किया। इन सभी के बीच तबला, हारमोनियम एवं ढ़ोलक वादन की प्रस्तुतियां अनोखे ढंग से हुई। भारत की प्रकृति, संस्कृति एवं गौरव की रक्षा हेतु विभिन्न गीत भी बच्चों द्वारा प्रस्तुत किये गये। समापन अवसर पर शिविर के प्रशिक्षकों को अतिथियों द्वारा सम्मानित भी किया गया। मेंहदी, रंगोली एवं चित्रकला प्रशिक्षण के अन्तर्गत शिविरार्थी बच्चों द्वारा तैयार की गई सामग्री की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

शिविराधिकारी श्री देवदत्त तिवारी ने कहा कि शिविर में शारीरिक एवं बौद्धिक कार्यक्रमों के साथ साथ अलग

अलग प्रकार के विषयों पर व्यवहारिक प्रशिक्षण शिविरार्थियों ने अलग अलग समूहों में प्राप्त किया। इस शिविर के माध्यम से बच्चों को मेंहदी, रंगोली, चित्रकला, वाद्य यंत्र के अंतर्गत ढोलक, तबला, हारमोनियम, सांस्कृतिक गतिविधियों सहित अभिव्यक्त की कला, महापुरुषों पर विचार कणिका, विभिन्न बौद्धिक सत्र एवं चर्चा सत्र के आयोजन के साथ-साथ जीवन में अनुशासन के लिए घोष वादन का प्रशिक्षण के साथ-साथ कंप्यूटर का भी प्रशिक्षण बच्चों को दिया गया।

शिविर के बौद्धिक सत्र में प्रतिदिन अलग अलग व्यवहारिक प्रयोगात्मक विषयों पर विषय विशेषज्ञों द्वारा ज्ञानवर्धन किया गया। शारीरिक प्रशिक्षण के अन्तर्गत डम्बल, लेजिम, योग दण्ड योग एवं नियुद्ध का प्रशिक्षण दिया गया। रात्रिकालीन कार्यक्रम के मनोरंजन सत्र में बालक बालिकाओं की उत्साहपूर्ण सहभागिता देखने को मिली। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगितायें भी करायी गयी। शिविर के दौरान दीनदयाल शोध संस्थान के विभिन्न प्रकल्पों के कार्यकर्ताओं का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ। जिनके अथक प्रयासों से कम समयावधि में बच्चे अधिक विद्याओं को सीख सकें।

शिविर के बौद्धिक प्रमुख श्री कालिका प्रसाद श्रीवास्तव ने बताया कि विभिन्न सत्रों में बौद्धिक के दौरान उन्हें शिविर की आवश्यकता-उद्देश्य और महत्व, हमारा गौरवशाली अतीत, व्यक्तित्व विकास एवं अनुशासन, चित्रकूट का पौराणिक महत्व, समाज एवं संस्कार, पुण्य भूमि भारत, जीवन में सेवा कार्य का महत्व, पर्यावरण का जीवन में महत्व एवं इसका संरक्षण व संवर्धन के साथ-साथ देश की महान विभूतियों व वीरांगनाओं के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर परिचर्चा का आयोजन सहित अन्य कई महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञों का मार्गदर्शन मिला।

दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि आप अपने अंदर विद्यमान क्षमताओं का आकलन कर अपने अंदर आत्मविश्वास जागृत करिए और नेतृत्व की क्षमता का विकास करिए। आप सभी ने लगन एवं परिश्रम से यहाँ जो भी सीखा है, अपने अपने क्षेत्रों में जाकर उसे आगे बढ़ाइए। इस व्यक्तित्व विकास शिविर में आपको जो सिखा सकते थे उससे कहीं ज्यादा आप सबने सीखा है और इसकी इतनी सुंदर रचना की है जो प्रशंसनीय है। आप सबने जो सीखा है वह पर्याप्त नहीं है अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है क्योंकि कला जीवनपर्यंत सीखने के बाद भी पूर्ण नहीं होती है। हम सभी व्यक्तित्व विकास के माध्यम से स्वयं, परिवार, समाज व राष्ट्र का उत्थान करें जिसमें देश

सर्वोपरि है ऐसे विचार सदैव हमारे मन मस्तिष्क पर रहने चाहिए। आप सभी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर बने, उन्नति के शिखर पर पहुंचे ऐसी आप सभी के लिए शुभकामनाएं एवं आप सबके द्वारा प्रस्तुत की गई शानदार प्रस्तुतियों के लिए बहुत-बहुत बधाई।

डीआरआई प्रबंध समिति के सदस्य डॉ. ओमशंकर त्रिपाठी ने कहा कि हम अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ ना कुछ सीखते रहते हैं जिससे हमारे व्यक्तित्व में बदलाव आते रहते हैं हमें सदैव सकारात्मक रहकर समाज में अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। व्यक्तित्व विकास शिविर का उद्देश्य शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक सभी प्रकार की शक्तियों का विकास करना है। 12 दिवस के इस अल्पावधि में आप सभी के द्वारा जो सीखा गया है और उसका प्रस्तुतीकरण हुआ है। वह अत्यंत सराहनीय है। आप सभी जिस प्रकार अन्य गतिविधियों में अल्प समय में बेहतर कर रहे हैं इसी प्रकार शिक्षा क्षेत्र में भी आप अपना परिवार का नाम रोशन करें और देश की समृद्धि के वाहक बने ऐसी आप सभी को शुभकामनाएं।

शिविर संयोजक डॉ. संतोष मिश्रा ने बताया कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा ग्रामीण बच्चों के समग्र व्यक्तित्व विकास शिविर की शुरुआत श्रद्धेय नानाजी के मार्गदर्शन में वर्ष 2001 से हुई थी। तब से चित्रकूट में सभी शैक्षणिक प्रकल्पों के साथ मिलकर प्रतिवर्ष 10 से 20 दिनों का व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन हो रहा है। इस वर्ष के शिविर में उ.प्र. तथा म.प्र. के 6 जिलों की 112 ग्राम आबादियों से 250 ग्रामीण बच्चों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्रीमती रीना मालवीय एवं श्री प्रकाश प्रजापति ने कहा कि विभिन्न ग्रामों, नगरों और विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तरों के बच्चों ने एक साथ रहकर सहजीवन का अभ्यास किया। शिविरार्थियों ने व्यक्तित्व विकास के विविध आयामों को हंसते-खेलते सहजता और सरलता से सीखा समझा है। समापन के उपरांत दीक्षांत सत्र में शिविरार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। इस सत्र में शिविरार्थियों ने अच्छा नागरिक बनने के लिये 6 सूत्रीय शपथ ली।

शिविर में शारीरिक प्रशिक्षक के रूप में राधेश्याम बाघमारे, संगीत प्रशिक्षक के रूप में डॉ. दादूराम, मोहित, श्री अवधेश, बौद्धिक विभाग में श्री कालका प्रसाद श्रीवास्तव, श्रीमती रीना मालवीय, डॉ. अशोक पाण्डेय, श्री राजेन्द्र सिंह, श्री हरीराम सोनी, श्री मदन तिवारी, डॉ. रामप्रकाश शर्मा एवं अन्य सभी कार्यकर्ताओं ने अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया।

शिविर का समापन कार्यक्रम में श्री सुरेंद्र सिंह गहरवार विधायक चित्रकूट, श्री चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय पूर्व राज्य मंत्री उत्तर प्रदेश शासन, जल पुरुष श्री उमाशंकर पाण्डेय, डॉ. भरत मिश्रा कुलपति महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्विद्यालय, डॉ. एस पी शुक्ला राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज बांदा, श्री नरेंद्र गोयल, श्री नीरज दीक्षित जिला शिक्षा अधिकारी सतना, श्री गिरीश अग्निहोत्री संयुक्त संचालक, श्री अविनाश पांडे डी.ओ. ट्राईबल, डॉ. रामनारायण त्रिपाठी संचालक गायत्री शक्तिपीठ, महन्त सीताशरण दास जी महाराज जानकी महल, श्री चूड़ामणि सिंह, श्री कृष्णा पांडे, श्री जगदीश गौतम सहित समस्त प्रकल्पों के प्रमुख कार्यकर्ता एवं गणमान्य नागरिक व अभिभावक उपस्थित रहे।

आकार संस्था के 50 कलाकारों ने गीत रामायण की हिंदी प्रस्तुति से प्रशंसकों को रामायण काल की कराई सैर

बाल और सखी गीतों के माध्यम से राम के संपूर्ण जीवन का हुआ प्रस्तुतीकरण एवं गौरव की रक्षा हेतु बच्चों ने प्रस्तुत किये कार्यक्रम

चित्रकूट/ लेखक और वरिष्ठ कवि जी.डी. माडगुलकर द्वारा लिखित, आदरपूर्वक 'आधुनिक वाल्मिकी' कही जाने वाली और महान संगीतकार श्री सुधीर फड़के की आवाज से अमर हुई 'गीत रामायण' हर मराठी मानस पर अंकित है। दीनदयाल शोध संस्थान के सहयोग से दीनदयाल परिसर के विवेकानन्द सभागार में गीत रामायण की भारत गौरव यात्रा कार्यक्रम के रूप में आकार संस्था के 50 कलाकारों ने महाराष्ट्र की संस्कृति का अनमोल गौरव बाल और सखी गीत रामायण को हिंदी में प्रस्तुत कर प्रशंसकों को रामायण काल की सैर कराई।

कार्यक्रम का शुभारंभ दादा वेदक अखिल भारतीय सत्संग प्रमुख एवं केंद्रीय संयुक्त सहमन्त्री विश्व हिन्दू परिषद, श्रीमती चित्रा देशपांडे संस्थापिका आकार संस्था, डॉ. वी.के. जैन ट्रस्टी सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट, प्रो नितेश पुरोहित भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान प्रयागराज एवं श्री अभय महाजन' राष्ट्रीय संगठन सचिव दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा 'भारत रत्न' नानाजी देशमुख के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलन व पुष्पार्चन के साथ किया गया।

आकार की संस्थापिका श्रीमती चित्रा देशपांडे और श्री सुखदा खांडकेकर ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य सम्पूर्ण मानवजाति को आदर्श जीवन के लिये मार्गदर्शन देना, बुराई से सदैव दूर रहने की सीख देना और हर कार्य को सच्चे और अच्छे मन से करने की प्रेरणा प्रदान करना है। राम के जीवन से हम सभी त्याग, अनुशासन और विनम्रता का समावेश करें। प्रभु श्री राम ने समाज को सत्य, दया, करुणा, धर्म और कर्तव्य परायणता का जो पाठ पढ़ाया है उसका

समावेश कर हम सभी, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक जीवन में सामंजस्यता और समरसता का संचार करें और राष्ट्र उत्थान के लिए प्रयत्नशील हों।

बाल और सखी गीतों के माध्यम से राम के संपूर्ण जीवन का प्रस्तुतीकरण गीत रामायण के कुछ चुनिंदा गीतों के माध्यम से करने का प्रयास किया गया। जिससे बच्चे और समाज में भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं हमारी विरासत का समावेश उनके अंदर हो और उनके संस्कारों में समाहित हो। पूर्व में भी उनकी टीम द्वारा देश विदेश में भी गीत रामायण की प्रस्तुति की जा चुकी है, यह क्रम विगत 10 वर्षों से चल रहा है।

कार्यक्रम के अंत में दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि बच्चे समाज, राष्ट्र, और देश का भविष्य है उनको सदैव यह समझाने और बताने का प्रयास करना कि बुराई से सदैव दूर रहे। बुराई कितनी भी शक्तिशाली क्यों ना हो एक दिन विजय अच्छाई की ही होती है और बुरे कर्म से सदैव बचकर रहना चाहिए हम अपने जीवन में सदाचार, संस्कार नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का समावेश कर प्रभु राम के जीवन आदर्शों का समावेश कर सशक्त एवं समृद्ध राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें।

दीनदयाल शोध संस्थान के सहयोग से दीनदयाल परिसर के विवेकानन्द सभागार में गीत रामायण की भारत गौरव यात्रा कार्यक्रम के रूप में आकार संस्था के 50 कलाकारों ने महाराष्ट्र की संस्कृति का अनमोल गौरव बाल और सखी गीत रामायण को हिंदी में प्रस्तुत कर प्रशंसकों को रामायण काल की सैर कराई।

कार्यक्रम में साधना पटेल अध्यक्ष नगर पंचायत चित्रकूट, श्री विशाल सिंह सी.एम.ओ, श्री देवदत्त तिवारी, श्री कमलेश बाजपेयी सहित डीआरआई के कार्यकर्ता एवं नगर के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

पादप आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन के लिए आईसीएआर-नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज और दीनदयाल शोध संस्थान के बीच हुआ 'एमओयू' साइन

कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक विज्ञान में स्वदेशी ज्ञान के साथ कृषि जैव विविधता पर होंगे प्रयोग

चित्रकूट/ कृषि उत्पादन बढ़ाने की चुनौतियों का सामना करने के लिए आधुनिक विज्ञान और स्वदेशी ज्ञान को मिश्रित करके कृषि उत्पादन प्रणालियों के भीतर अधिक से अधिक जैव विविधता को शामिल करने के लिए विभिन्न अनुसंधान कार्यों और प्रयोगों के लिए आरोग्यधाम चित्रकूट के कार्यालय में ICAR-नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज, ICAR, DRI, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय पूसा कैंपस, नई दिल्ली और दीनदयाल शोध संस्थान के बीच एक समझौता ज्ञापन 'MOU' साइन किया गया।

आईसीएआर-नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज नई दिल्ली के निदेशक डॉ. ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह और दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने 'एमओयू' साइन किया और परंपरा अनुसार दोनों संस्थाओं के प्रशासनिक मुखियों ने हस्ताक्षर युक्त अनुबंध की प्रति एक दूसरे को सहर्ष सौंपी। इस अवसर पर आरोग्यधाम के आयुर्वेद रिसर्च शाला के प्रभारी डॉ मनोज त्रिपाठी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज नई दिल्ली के निदेशक डॉ. ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह ने इस दौरान बताया कि नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज, अपनी अन्य जिम्मेदारियों और प्रभारों के अलावा, कृषि उत्पादन बढ़ाने की चुनौतियों का सामना करने के लिए आधुनिक विज्ञान और स्वदेशी ज्ञान को मिश्रित करने की उम्मीद करता है। यह कृषि उत्पादन प्रणालियों के भीतर अधिक से अधिक जैव विविधता को शामिल करने का प्रयास कर रहा है। हालाँकि दीनदयाल शोध संस्थान जैसी कई संस्थाएँ पहले से ही सक्रिय रूप से शामिल हैं, इसलिए प्रभावी सुधार और कृषि जैव विविधता संरक्षण नीतियों को सुनिश्चित करने के लिए सभी स्तरों पर अधिक समन्वय कार्य की आवश्यकता है, जिससे जनता, विशेषकर गरीबों को लाभ हो। कृषि और जैव विविधता के बीच पूरकता के निर्माण के लिए कृषि अनुसंधान और विकास और भूमि उपयोग में बदलाव की आवश्यकता हो सकती है।

दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि संस्थान, विशेष रूप से ग्रामीण भारत के सतत विकास के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए भारतीय समाज के पुनर्निर्माण के उद्देश्य से सामाजिक विज्ञान के कई आयामों पर काम कर रहा है।

इस अनुबंध के बाद दोनों संस्थानों के बीच सामान्य अनुसंधान हितों और संबद्ध गतिविधियों के क्षेत्रों पर चर्चा करते हुए, सामुदायिक बीज बैंक, पादप आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन, औषधीय पौधों, सूखे के क्षेत्र में सहयोगी अनुसंधान परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए दीर्घकालिक सहयोग में प्रवेश करने का निर्णय लिया है। भूमि दलहन के साथ-साथ किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज के प्रसार के लिए आधार बीज और प्रमाणित बीज का उत्पादन पर जोर देने का प्रयास किया जाएगा।

स्वावलंबन केंद्रों सहित मझगवां में मनाया वीरांगना रानी दुर्गावती का 461वां बलिदान दिवस

5 दिवसीय बाल शिविर का हुआ समापन, शिविर में 36 ग्राम पंचायतों की 58 ग्राम आबादियों से 205 वनवासी क्षेत्रों के बच्चों की रही सहभागिता

मझगवां / वीरांगना रानी दुर्गावती के 461वें बलिदान दिवस पर उनकी राष्ट्रभक्ति और उनके कृतित्व को दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा अपने सभी स्वावलंबन केंद्रों पर पूरी श्रद्धा के साथ याद किया गया। रानी दुर्गावती के बलिदान दिवस 24 जून को चित्रकूट एवं मझगवां जनपद के सभी स्वावलंबन केन्द्रों पर विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। बड़ा आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र एवं कृष्णादेवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय मझगवां के महर्षि वाल्मीकि परिसर में किया गया।

जिसमें बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने की दृष्टि से बाल्मीकि परिसर कृष्णा देवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय मझगवाँ में दिनांक 20 जून से आयोजित बाल शिविर का समापन कार्यक्रम किया गया। यह नई पीढ़ी को गढ़ने का अभिनव प्रयोग है, जिसमें वनवासी बन्धु / भगिनियों के सशक्तिकरण के साथ साथ सामाजिक समरसता का कार्य इसके माध्यम से किया जा रहा है। इस बाल शिविर में 205 शिविरार्थी बच्चे सहभागी रहे हैं। जिसमें 36 ग्राम पंचायतों की 58 ग्राम आबादियों (37 स्वावलंबन केंद्र) से 99 बालक एवं 106 बालिकाओं ने सम्मिलित होकर संगीत (गायन-वादन-नृत्य), डम्बल, लेजिम, चित्रकला, कम्प्यूटर, घोष आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का समापन बच्चों की कलाओं के प्रदर्शन के साथ हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ धारकुंडी महाराज श्री वीरेंद्र महाराज, श्री संजय बाबा, श्री रामखेलावन कोल जिला पंचायत अध्यक्ष सतना, चित्रकूट विधायक श्री सुरेन्द्र सिंह गहरवार, श्री पंकज अग्रवाल चेयरमैन डिस्ट्रिक्ट कोऑपरेटिव बैंक बाँदा चित्रकूट, सामाजिक कार्यकर्ता श्री चूड़ामणि सिंह, श्री रामराज सिंह, श्री रामबेटा कुशवाहा, श्री गिरीश अग्निहोत्री डिप्टी डायरेक्टर शिक्षा विभाग, श्री चंद्रप्रकाश खरे द्वारा वीरांगना रानी दुर्गावती जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि की गई एवं उनके बलिदान दिवस पर उनकी राष्ट्रभक्ति एवं उनके

कृतित्व पर विस्तृत प्रकाश डाला गया। इस दौरान दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने भी पुष्पार्चन कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

शिविरपालक अधिकारी श्री कालिका प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा शिविर आख्या का वाचन किया गया। उसके बाद बच्चों द्वारा सरस्वती वंदना व शारीरिक प्रदर्शनों से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। शारीरिक प्रशिक्षक श्री राधेश्याम बाघमारे के नेतृत्व में अलग-अलग समूहों में लेजिम, योगासन, डम्बल की आकर्षक प्रस्तुतियों ने सभी को प्रभावित किया। गीत की धुन पर योगचाप का प्रदर्शन तथा विद्या, आयु, प्रज्ञा, बल की वृद्धि के लिये सामूहिक सूर्य नमस्कार के साथ ताल से ताल, कदम से कदम, स्वर से स्वर मिलाकर सभी बच्चों ने डम्बल का प्रदर्शन किया।

बाल शिविर में बच्चों को व्यक्तित्व विकास के लिए बौद्धिक सत्र, विचार कर्णिका (प्रेरक प्रसंग), शारीरिक-डम्बल, योगचाप, योगासन, नियुद्ध एवं पिरामिड, साहसिक - ताइकाण्डो का प्रदर्शन किया गया।

वीरांगना दुर्गावती शोध समिति के अध्यक्ष श्री रामराज सिंह ने कहा कि महापुरुषों की जन्म जयंती या बलिदान दिवस मनाने का उद्देश्य है कि हम उनके बारे में सुनने एवं जानने के साथ उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को अपने जीवन में उतारने का दिवस होता है। हम अपनी भारतीय संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन करके ही दुर्गावती जी को श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। शिविर में हम सबने जो यहां सीखा है उसे अपने जीवन में अपनाएं एवं अपने आसपास की ग्राम आबादी में सिखायें व परिवार, समाज को उन्नत बनाये। सामाजिक कार्यकर्ता श्री चूड़ामणि सिंह ने कहा कि वीरांगनाओं एवं वीरों की यह धरा सदैव ही गौरवशाली रही है उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व ही समाज की सबसे बड़ी पूंजी है। कार्यक्रम का संचालन श्री राजेन्द्र सिंह व धन्यवाद ज्ञापन गंगाराम यादव द्वारा किया गया। समापन प्रकट कार्यक्रम में श्री जितेन्द्र वर्मा एस.डी.एम मझगवां, श्री संजय श्रीवास्तव आर.टी.ओ सतना, श्री पंकज द्विवेदी, जिला विद्युत अभियंता, श्री शंकरदयाल त्रिपाठी, श्री प्रबल श्रीवास्तव, श्री विष्णु तिवारी, श्रीमती आशा पटेल, श्री पन्नालाल अवस्थी, डॉ. अश्विन अवस्थी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने की दृष्टि से बाल्मीकि परिसर कृष्णा देवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय मझगवाँ में दि. 20 जून से आयोजित बाल शिविर का समापन कार्यक्रम किया गया।

मौसम में "जलवायु परिवर्तन से कृषि में बढ़ती अनिश्चितता" के सन्दर्भ में कृषि विज्ञान केन्द्र में जागरुकता कार्यक्रम

अनुसूचित जाति महिलाओं हेतु रोजगार परक सिलाई प्रशिक्षण का समापन

गनीवां/ दीनदयाल शोध संस्थान, कृषि विज्ञान केंद्र, गनीवां, चित्रकूट द्वारा मौसम में "जलवायु परिवर्तन से कृषि में बढ़ती अनिश्चितता" के सन्दर्भ में एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से वर्तमान कृषि में पड़ने वाले प्रभाव एवं कारकों के प्रति कृषकों एवं कृषि छात्रों को जागरूक करने के उद्देश्य के साथ आयोजन किया गया।

इस समय मौसम पूर्णतयः कृषि एवं प्रकति के विपरीत प्रदर्शित हो रहा है, कभी तेज धूप तो कहीं ठंडी हवाएं चलने लग रही हैं। इसी के बीच तापमान में एकाएक वृद्धि कहीं गिरावट देखने को मिल रही है, इसी अनिश्चितता के कारण वर्तमान फसल एवं पशुओं में प्रभाव प्रदर्शित हो रहा है। साथ ही केंद्र पर अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज अतर्रा बांदा के कृषि स्नातक चतुर्थ वर्ष के 80 छात्र-छात्राओं को ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव के अंतर्गत पिछले 15 दिन से चल रहे प्रशिक्षण एवं अनुसूचित जाति की महिलाओं हेतु रोजगार परक सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम गत 60 दिनों से केंद्र में संचालित है, जिसमें आस-पास के गावों की 25 महिलायें रोजगार उन्नयन की दृष्टि से सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं, ऐसे दोनों कार्यक्रमों का समापन एवं प्रमाण पत्र वितरण किया गया।

> तापमान में एकाएक वृद्धि कहीं गिरावट देखने को मिल रही है, इसी अनिश्चितता के कारण वर्तमान फसल एवं पशुओं में प्रभाव प्रदर्शित हो रहा है।

जागरूकता कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती निष्ठा उपाध्याय पुलिस क्षेत्राधिकारी, विशिष्ट अतिथि श्री राजकुमार जी उप निदेशक कृषि, चित्रकूट, श्री राजपति शुक्ला जी जिला कृषि अधिकारी, श्री रजौल नागर जी सब इंस्पेक्टर एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता हेतु केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. चन्द्रमणि त्रिपाठी सहित सभी अतिथियों ने महापुरुषों के चित्रों पर पुष्पांजलि एवं दीपप्रज्ज्वल के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा में डॉ. चंद्रमणि त्रिपाठी ने कृषि विज्ञान केंद्र के स्थापना के उद्देश्य एवं केंद्र पर संचालित गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए आज के कार्यक्रम की उपयोगिता के बारे में सभी को बताया और कहा कि केवल चित्रकूट जनपद ही नहीं आस-पास के जिलों के किसानों का भी प्रतिदिन विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए केंद्र में आगमन होता है कृषि विज्ञान केंद्र विभिन्न सोशल मीडिया एवं प्रसार गतिविधि के माध्यमों से जिले के 1,00,000.00 (एक लाख) से अधिक किसानों को मौसम पूर्वानुमान, कृषि कार्य हेतु आवश्यक करणीय कार्य आदि की जानकारी उपलब्ध करा रहा है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित सभी प्रशिक्षणार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती निष्ठा उपाध्याय पुलिस क्षेत्राधिकारी ने महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि अब आप लोगों ने घर से बाहर निकल कर रोजगारपरक बेहतर भविष्य निर्माण के लिए यह कदम शेष महिलाओं के लिए प्रेरणा एवं उदाहरण साबित होगा। इसी के साथ मुख्य अतिथि एवं उपस्थित अन्य अतिथियों ने श्रीमती आरती निवासी गनीवां को सांकेतिक रूप में प्रमाणपत्र एवं सिलाई मशीन के साथ अग्रिम भविष्य की मंगलकामना के साथ उपलब्ध कराई।

कार्यक्रम में केंद्र के मौसम वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम के संयोजक डॉ. मनोज शर्मा ने गत वर्षों में जिले में हुए जलवायु परिवर्तन एवं उनके कारकों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया साथ ही जिला कृषि मौसम इकाई द्वारा संचालित किसानो के लिए सेवाओं के बारे में जानकारी दी, इसी के साथ केंद्र की वैज्ञानिक श्रीमती ममता त्रिपाठी ने सिलाई प्रशिक्षण को महिला कृषकों के साथ आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करने की प्रारंभिक सीढ़ी बताया और कहा कि हमारे यहां से महिला कृषक सिलाई कढ़ाई के साथ साथ खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन से सम्बंधित प्रशिक्षणों के माध्यम से पूरे वर्ष महिलाओं की सामाजिक भागीदारी बढ़ने की दिशा में निरंतर कार्य संचालित हैं। पशुओं में मौसम परिवर्तन से होने वाली बीमारियों एवं दुग्ध उत्पादन में पड़ने वाले प्रभाव उनकी पहचान और आवश्यक रोकथाम की जानकारी पशु वैज्ञानिक डॉ. दीपेश मिश्रा के द्वारा दी गयी।

कार्यक्रम में जिला कृषि अधिकारी श्री राजपति शुक्ला जी ने कृषि छात्रों की सामाजिक भागीदारी एवं ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव का कृषि शिक्षा में महत्व के बारे में छात्रों को बताया और कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है, 70% से अधिक ग्रामीण परिवार अपनी आजीविका के लिए इस पर निर्भर हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में, कृषि कुल सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 17% का योगदान देती है और लगभग 58% आबादी को रोजगार प्रदान करती हैं। लेकिन इन सब आकंड़ों के साथ कृषि के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी शामिल नहीं है, इसके लिए जरूरी है कि महिलायें अपने उद्यम का दस्तावेज एवं प्रबंधन के साथ-साथ लेखा जोखा भी रखें साथ ही समय समय पर क्षमता विकास पर भी जोर दें इससे भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भागीदारी में वृद्धि होगी।

कार्यक्रम के अंत में श्री राजकुमार जी उप निदेशक कृषि ने कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा संचालित कार्यक्रमों को कृषि विकास के लिए लाभकारी बताया और कृषि छात्रों को कृषि उत्पादन से कृषि उद्यमिता की ओर बढ़ाते हुए कृषि जगत में अपनी उपयोगिता प्रदर्शित करने को कहा साथ ही कृषि छात्रों से प्राकृतिक खेती एवं श्री अन्न उत्पादन हेतु जन जागरूकता की जिम्मेवारी निर्वहन के लिए कहा इसके साथ प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अनुभव कथन भी बताये गए इस कार्यक्रम में 151 कृषक/महिला कृषक, कृषि छात्र सहित केंद्र के सभी कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

रामनाथ आश्रमशाला में वार्षिकोत्सव, अभिभावक एवं पुरातन छात्र सम्मेलन

बच्चों द्वारा दिवारी नृत्य, पिरामिड और राई नृत्य की प्रस्तुति ने अतिथियों को किया प्रभावित

सम्मेलन में 198 अभिभावकों सहित 78 पुरातन छात्रों की रही उपस्थिति

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान के शैक्षणिक प्रकल्प रामनाथ आश्रमशाला में 2 दिवसीय वार्षिकोत्सव, अभिभावक एवं पुरातन छात्र सम्मेलन सम्पन्न हुआ। एक दिन पूर्व पुरातन छात्र एवं अभिभावकों की गोष्ठी में दीनदयाल शोध संस्थान के स्वावलंबन अभियान प्रभारी डॉ. अशोक पाण्डेय ने अपने सम्बोधन में बताया कि हम अपने लिए नहीं अपनों के लिए हैं, राष्ट्रऋषि नाना जी ने हम सबको ऐसा रास्ता बताया है कि आज जीवन में सबसे महत्वपूर्ण पढ़ाई है तभी छात्रों का सर्वांगीण विकास सम्भव है। गांव में प्रतिभाओं की कमी नहीं, केवल उन्हें पारखी नजर से पहचानने की आवश्यकता है। राम और सीता का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि समाज में जागरूकता लाने का काम वे अपने वनवास काल में भी करते रहे। मां पहली पाठशाला है दूसरा परिवार और तीसरा समाज।

वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र सिंह ने पुरातन छात्रों को सम्बोधित करते हुए बताया कि कोई व्यक्ति तुरन्त महान नहीं बनता केवल अपनी लगन से कार्य करने पर वह महान बन सकता है। मेहनत और लगन के साथ अपने कार्य को करना चाहिए।

छात्र छात्राओं के वार्षिक उत्सव में महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रा.वि.वि. के कुलपति डॉ. भरत मिश्रा ने एक कहानी के माध्यम से एक बहुत महत्वपूर्ण बात बताई कि एक आफिस में नये अधिकारी आये हुए थे और उनके आफिस में चिड़िया का घोंसला लगा हुआ था यह देखकर अपने चपरासी को बुलाया और कहा कि यह घोंसला कल तक हट जाना चाहिए अगले दिन जब मैं आफिस आया तो देखा घोंसला उसी प्रकार लगा हुआ था डांट-फटकार के साथ चपरासी को बुलाकर कहा कि तुमने यह कार्य क्यों नहीं किया चपरासी ने बड़ी तटस्थता से उत्तर दिया कि इसमें चिड़िया के बच्चे हैं चिड़िया उन्हें दाना चुगाती है। मैं उन्हें बेघर नहीं कर सकता चाहे आप मुझे नौकरी से निकाल दीजिए। इससे हमको यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि बड़े होकर देश समाज और परिवार के लिए हमें कार्य करना चाहिए।

सतना जिले के जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. नीरव दीक्षित ने कहा कि बच्चों का कार्यक्रम देखकर मुझे अपना बचपना याद आ गया। दिवारी नृत्य, पिरामिड और राई नृत्य देखकर मैं बहुत प्रभावित हूं कि इस वनवासी क्षेत्र के बच्चे यहां रहकर पढाई के साथ-साथ इस प्रकार के साहसिक कार्यकम प्रस्तुत कर रहे हैं। बच्चों को बहुत ढेर सारी शुभकामनाएं।

इस अवसर पर कामदगिरि मुखारविन्द के महन्त पूज्य मदनदास जी, पूज्य सन्त सीताशरण दास जी, सन्त निर्भयानन्द जी बच्चों के कार्यकम देखकर बहुत हर्षित हुए और उन्होंने कहा कि बच्चे आगे चल कर अपने परिवार समाज और देश का नाम रोशन करेंगे। आज के कार्यकम में मुख्य रूप से के.के. बाजपेयी पूर्व प्राचार्य कामता, डॉ. अमरजीत सिंह म.गां.चि.ग्रा.वि.वि.चित्रकूट, दीनदयाल शोध संस्थान के उप महाप्रबंधक डॉ. अनिल जायसवाल, शैक्षणिक प्रभारी श्री कालिका प्रसाद श्रीवास्तव, कृष्णादेवी विद्यालय, मझगवां के प्राचार्य श्री गंगाराम यादव, परमानन्द आश्रम पद्धति विद्यालय गनीवां के प्रधानाचार्य श्री बरुण कुमार त्रिपाठी, सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय के प्राचार्य श्री मदन तिवारी उपस्थित रहे। अतिथियों का आभार प्रदर्शन विद्यालय के प्राचार्य श्री सत्यराम यादव ने किया एवं सफल संचालन विद्यालय के शिक्षक श्री प्रकाश कुमार प्रजापति ने किया। कार्यक्रम में 198 अभिभावकों, 78 पुरातन छात्र दोनों दिन कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

लोकमाता सुमती ताई सुकलीकर की जन्मशताब्दी वर्ष पर हुआ महिला संगम

विविध क्षेत्रों की विद्वतजन महिलाओं ने 'महिला संगम' में रखे विचार

चित्रकूट/ सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय के बाल कला भवन में मातृशक्ति, लोकमाता श्रीमती सुमती ताई सुकलीकर जन्मशताब्दी वर्ष के अंतर्गत 'महिला संगम' आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. वृन्दा शुक्ला पुलिस अधीक्षक चित्रकूट, श्रीमती निर्मला नायक-वरिष्ठ अधिवक्ता जबलपुर हाईकोर्ट, श्रीमती प्रभा गुप्ता-सदस्य राज्य महिला आयोग उत्तर प्रदेश, डॉ. शशि ठाकुर, श्रीमती मोनिका अवस्थी सामाजिक कार्यकर्ता उपाध्यक्ष सक्षम संस्था, श्रीमती ममता पाण्डेय-पूर्व महापौर सतना, श्रीमती जान्हवी त्रिपाठी एवं कार्यक्रम संयोजिका श्रीमती सीमा पाण्डेय ने दीपप्रज्ज्वलन व माल्यार्पण के साथ किया।

श्रीमती सीमा पाण्डेय ने कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ताई ने अपने जीवन में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, महिला सशक्तिकरण के सभी आयामों को अपने कृतित्व से परिलक्षित किया है। आज दीनदयाल शोध संस्थान के आह्वान पर इतनी बड़ी मातृशक्ति का एकत्र होना यह प्रदर्शित करता है कि महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं और स्व प्रेरणा से जीवन के सभी क्षेत्रों में बेहतर करने के लिए प्रयत्नशील हैं।

एसपी डॉ. वृन्दा शुक्ला ने अपने विचार रखते हुए कहा कि अपने आत्म सम्मान की रक्षा हमें स्वयं करनी होगी जब तक हम अपनी चुप्पी स्वयं नही तोड़ेंगे तब तक कोई हमारी सहायता के लिए नहीं आएगा। हमें अपने प्रति होने वाले किसी भी अत्याचार या अपराध के लिए खुलकर आगे आना होगा। अपराध करने वाले का सामाजिक बहिष्कार करना हमारा कर्तव्य है। बेटी का सम्मान करें उसके सहयोगी बनें, उसे शिक्षित स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर बनाएं। सभी माताएं अपने बेटों को राजा बेटा बनाने के स्थान पर सभ्य, संस्कारित एवं समाज व राष्ट्र का योग्य नागरिक बनाएं। महिलाएं अपने लिए प्राप्त होने वाले अवसरों का अधिकतम उपयोग करके सफल एवं सबल बनती हैं। सशक्त समाज के निर्माण के लिए हम सभी को अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन सजगता एवं सहजता के साथ करना पड़ेगा।

श्रीमती ममता पाण्डेय पूर्व महापौर सतना ने कहा कि अभावों में अपना प्रभाव छोड़ना ही महिलाओं के जीवन का ध्येय होना चाहिए। दूसरों के दोषों को न देखना हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। नारी ही ब्रह्मा है हमारे लिए राष्ट्र कार्य ही सर्वोपरि है। श्रीमती मोनिका अवस्थी सामाजिक कार्यकर्ता ने कहा कि जब तक महिलाएं शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से मजबूत नही होंगी तब तक बेहतर एवं सभ्य समाज की कल्पना करना सम्भव नहीं। श्रीमती प्रभा गुप्ता ने कहा कि हम सभी महिलाएं अपने स्व प्रयत्नों से अपने जीवन में असाधारण व्यक्तित्व एवं कृतित्व की धनी बनकर समाज में अपनी आभा बिखेर सकती हैं। ताई ने समाज के विविध क्षेत्रों में जो कार्य सम्पन्न किये हैं वे अलौकिक एवं अनुकरणीय हैं।

डॉ. शशि ठाकुर ने कहा कि उत्तम स्वास्थ्य से आशय स्वस्थ्य विचार, सामान्य व्यवहार एवं हममें निहित ऊर्जा शक्ति का अपनी योग्यता, क्षमता के अनुरूप उपयोग एवं आचरण ही शारीरिक, मानसिक भावनात्मक रूप से स्वस्थ होने की पहचान हो सकती है।

श्रीमती निर्मला नायक, वरिष्ठ अधिवक्ता ने कहा कि पारिवारिक दायित्वों का पूर्ण निर्वहन करते हुए पूरी लगन, निष्ठा के साथ देशव्यापी राजनैतिक एवं सामाजिक दायित्वों को सफलतापूर्वक सम्भालना एक ग्रहणी के लिए कितना असम्भव कार्य लगता है परंतु ताई का जीवन इस आश्चर्यजनक कार्य का उत्तम उदाहरण है। मालिक बड़ा नहीं होता सेवादार बड़ा होता है। हमें अपने अंदर इस भावना का समावेश करना होगा। सही और गलत का निर्णय करने की परख हमारे अंदर सही समय पर होनी चाहिए तभी हम बेहतर कर पाएंगे। श्रीमती ममता त्रिपाठी-गृह वैज्ञानिक ने उत्तम स्वास्थ्य के लिए श्रीअन्न के प्रयोग पर बल दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती रीना मालवीय ने तो वहीं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. भारती श्रीवास्तव ने किया। जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट एवं कृषि विज्ञान केंद्र गनीवां एवं मंझगवाँ द्वारा प्रदर्शनी लगाई गई। कार्यक्रम में श्रीमती साधना पटेल, अध्यक्ष-नगर परिषद चित्रकूट, श्रीमती राजेश्वरी द्विवेदी, श्रीमती विमला सिंह, श्रीमती किरण अग्रवाल, श्रीमती आशा पटेल, श्रीमती नमिता अग्रवाल, श्रीमती मधु अग्रवाल, दीनदयाल शोध संस्थान के उप-महाप्रबंधक डॉ. अनिल जायसवाल, समाज शिल्पी दम्पति प्रभारी डॉ. अशोक पाण्डेय, श्री राजेन्द्र सिंह, श्री हरीराम सोनी, श्री विनीत श्रीवास्तव, श्री मदन तिवारी, श्री मनोज सैनी, श्री कालिका प्रसाद श्रीवास्तव, जन शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री अनिल कुमार सिंह आदि कार्यकर्ता प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की 56वीं पुण्यतिथि

डीआरआई के प्रकल्पों सहित स्वावलंबन केन्द्रों पर दीनदयाल जी के 'एकात्म मानववाद' का दर्शन पर हुआ चिंतन

चित्रकूट 11 फरवरी 2024/ दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की 56वीं पुण्यतिथि दीनदयाल पार्क, उद्यमिता विद्यापीठ, चित्रकूट में मनाई गई। प्रातःकाल से ही संस्थान के विविध प्रकल्प गुरुकुल संकुल, उद्यमिता विद्यापीठ, सुरेन्द्रपॉल ग्रामोदय विद्यालय, आरोग्यधाम, आईटीआई तथा खादी ग्रामोद्योग आयोग प्रशिक्षण केन्द्र के प्रशिक्षणार्थी एवं बच्चों तथा गुरु माता-पिता सहित कार्यकर्ताओं द्वारा अपने-अपने प्रकल्पों में दीनदयाल जी के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किये गये तथा कार्यकर्ताओं एवं बच्चों द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के जीवन से जुड़े प्रेरणादायी प्रसंगों को दैनिक जीवन में आत्मसात करने हेतु मंचन भी किया गया।

इस अवसर पर संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने बताया कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का मानना था कि व्यक्ति की समग्र जरूरतों का मूल्यांकन किये बिना कोई भी विचार भारत के विकास के अनुकूल नहीं होगा। उन्होंने भारतीयता के अनुकूल पूर्ण भारतीय चिन्तन के रूप में 'एकात्म मानववाद' का दर्शन प्रस्तुत किया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन के अनेक पक्ष, कई आयाम और अनेक कार्य हैं। कम उम्र में ही दुनिया को अलविदा कहने वाले पंडितजी की जिंदगी से जुड़े अनेक किस्से हैं, जो काफी दिलचस्प होने के साथ-साथ प्रेरणा भी देते हैं। 11 फरवरी, 1968 को मात्र 51 वर्ष की उम्र में दुनिया को अलविदा कहने वाले पंडितजी की ईमानदारी, सादगी और दर्शन आज भी लोगों को सीख देते हैं।

सामूहिक कार्यक्रम के रूप में पं. दीनदयाल पार्क उद्यमिता परिसर में स्थापित लगभग 15 फिट ऊँची प्रतिमा पर माल्यार्पण कर संस्थान के सभी महिला पुरुष कार्यकर्ताओं द्वारा पुष्पांजलि अर्पित की गई। इसके अलावा संस्थान के सभी स्वावलंबन ग्रामीण केंद्रों पर भी दीनदयाल जी की पुण्यतिथि मनाई गई। कृषि विज्ञान केन्द्र, मझगवां, गनीवां सहित आवासीय शैक्षणिक प्रकल्प रामनाथ आश्रमशाला पीली कोठी, कृष्णादेवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय मझगवां, परमानन्द आश्रम पद्धति विद्यालय गनीवां में पंडित दीनदयाल जी के 'एकात्म मानववाद' का दर्शन पर व्याख्यानमाला आयोजित की गई।

फसल विविधीकरण पर केवीके में प्रशिक्षण

स्टार्च युक्त फसलों से इथेनाल बनाने मक्का की खेती को दिया जा रहा बढ़ावा

मझगवां/ कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां में फसल विविधीकरण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में डॉ. नम्रता जैन, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं परियोजना प्रभारी, समन्वित कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना, डॉ. एस.बी. अग्रवाल, सह-प्राध्यापक एवं डॉ. पुष्पेन्द्र यादव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रमुख डॉ. आर.एस. नेगी, विषय वस्तु विशेषज्ञ सस्य विज्ञान डॉ. अजय चौरसिया द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

दो दिवसीय कृषकों एवं कृषक महिलाओं हेतु 12-13 फरवरी तक और प्रसार अधिकारियों/आदान विक्रेताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम 15-16 फरवरी तक आयोजित किये गए। प्रशिक्षण में मुख्य रूप से खरीफ में मक्का ज्वार, कोदो, रागी एवं रबी में सरसों, चना,मसूर और जायद में मक्का और मूंग की खेती की कार्य योजना पर विस्तृत चर्चा हुई। मक्का की खेती को बढ़ावा देने का मुख्य कारण कम पानी, कम समय और कम लागत में इसकी खेती की जा सकती हैं।

विकास खण्ड मझगवां के ग्राम पटनी में इथेनाल संयन्त्र की स्थापना की गई जिसमें स्टार्च युक्त फसलों से इथेनाल बनाया जा रहा है और मक्का इसके लिए अति महत्वपूर्ण फसल हैं। इस संयंत्र के उत्पादन प्रबंधक श्री आर.के. पाण्डेय ने बताया कि यदि किसान मक्का की खेती करते हैं तो अच्छा मूल्य प्राप्त हो सकता है। इसके लिए जिले में लगभग 750 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर मक्का की खेती करने की आवश्यकता है।

भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मेरठ एवं जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर द्वारा संचालित फसल विविधीकरण अग्रगामी परियोजना में सतना जिले का चयन किया गया है, जिसके अन्तर्गत फसल विविधीकरण हेतु मक्का की खेती को जिले में बढ़ावा देने के लिए समूह प्रदर्शन के रूप में किया जाएगा।

स्वावलंबन केन्द्र भरगवां में वन धन विकास केंद्र का शुभारंभ

वन धन स्वयं सहायता समूहों को वनोपज एकत्रीकरण, प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन पर किया प्रशिक्षित

मझगवां/ स्वावलंबन केन्द्र भरगवां में प्रधानमंत्री वन धन योजना के अंतर्गत वन धन विकास केंद्र का शुभारंभ नानाजी श्रद्धा केंद्र में मुख्य अतिथि सतना सांसद श्री गणेश सिंह, विशिष्ट अतिथि विधायक श्री सुरेंद्र सिंह गहरवार, कलेक्टर सतना श्री अनुराग वर्मा, वन अनुभागीय अधिकारी श्री अभिषेक तिवारी, तहसीलदार श्री जितेंद्र तिवारी, दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री वसंत पंडित एवं दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन की अध्यक्षता में कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर सरपंच श्रीमती रामा यादव, श्रीमती अंजुला झा एन आर एल एम की जिला प्रोजेक्ट मैनेजर, कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी डॉ. राजेन्द्र सिंह नेगी भी उपस्थित रहे।

इस दौरान प्रधानमंत्री वन धन विकास केन्द्र योजनान्तर्गत दीनदयाल शोध संस्थान एवं मध्य प्रदेश राज्य लघु वनोपज संघ, भोपाल द्वारा वन धन स्वयं सहायता समूहों का चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम वनोपज एकत्रीकरण, प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन पर 20 फरवरी से 23 फरवरी तक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में वन धन स्वयं सहायता समूहों द्वारा पलास के फूलों से बने गुलाल चकुंदर हल्दी महिलाओं द्वारा बनाया गया जो कि कलेक्टर श्री वर्मा और सभी अतिथियों को भेंट की गई।

इस अवसर पर कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा ने कहा कि वनों को न काटें एवं उनसे लघु वनोपज का एकत्रीकरण करें जिससे आप लोगों की आय में वृद्धि होगी। साथ ही इन प्रशिक्षणों से आपकी क्षमता का विकास होगा उसके लिए नाना जी की परिकल्पना मैं अपने लिए नहीं अपनों के लिए हूँ, ऐसे सफल प्रयास दीनदयाल शोध संस्थान ही कर सकता है। सांसद श्री गणेश सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में देश का विकास हो रहा है, मोदी जी ने वनवासी भाई बहनों के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। भारत सरकार द्वारा वनांचल में रहने वाले बंधु-भगिनीयों के उत्थान की दृष्टि से शुरू की गई "वन-धन" योजना के माध्यम से वनवासी बंधुओं की जो भौगोलिक संपदा है, उसे विपणन विकास द्वारा देश में जनजाति लोगों का सामाजिक आर्थिक विकास करना है।

दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि वन-धन योजना के माध्यम से जनजाति लोगों को जानकारी, उपकरण और सूचनाओं से सशक्त करना है ताकि, वे अपने कार्यों को अधिक क्रमबद्ध और वैज्ञानिक तरीके से कर सकें। इस अवसर पर दीनदयाल शोध संस्थान के प्रशिक्षक सर्वश्री विनीत श्रीवास्तव, डॉ. मनोज त्रिपाठी, हेमराज द्विवेदी, मनोज सैनी, राजेन्द्र पटेल, नत्थू विश्वकर्मा, निखिल मिश्रा, हरीश नापित, नत्थू कुशवाहा, बुद्धि विलास यादव, उमेश कुमार प्रजापति, हरेन्द्र गुप्ता, सतीश मालवीय, दीपेन्द्र द्विवेदी, अशोक शर्मा, वीरेंद्र प्रजापति, अभिषेक, सुरेन्द्र प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

नानाजी की चौदहवीं पुण्यतिथि पर चित्रकूट के दीनदयाल परिसर में 5 स्थानों पर हुए सेमिनार, कार्यशाला एवं सम्मेलन

चित्रकूट / भारत रत्न नानाजी देशमुख के निर्वाण के 14 वर्ष पूर्ण होने पर उनकी 14वीं पुण्यतिथि पर 25-26-27 फरवरी, 2024 को दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार, विवेकानंद सभागार व बाल कला भवन में पांच अलग-अलग राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन व संगोष्ठी आयोजित की गईं। जिसका शुभारम्भ 25 फरवरी को सतना सांसद श्री गणेश सिंह, बांदा चित्रकूट के सांसद श्री आरके सिंह पटेल, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष श्री प्रियंक कानूनगो, वेस्टइंडीज के प्रो. नरेश सिंह, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलपति प्रो अरविंद शुक्ला, झांसी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो मुकेश पांडे, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. भरत मिश्रा, पदमश्री उमाशंकर पांडे, मध्य प्रदेश शासन की पूर्व मंत्री सुश्री उषा ठाकुर, पौध किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण के अध्यक्ष डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, अटारी डायरेक्टर डॉ. शांतनु दुबे, डॉ. एस.आर.के. सिंह, डॉ. अंबेडकर महू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डी.के. शर्मा, श्री शेषाद्री चारी, श्री गजानन डांगे आदि विद्वत जनों के आतिथ्य में किया गया।

सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के संयोजक श्री वसंत पंडित ने बताया कि 1968 में भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान (डीआरआई) ने चित्रकूट में पानी की कमी, आदिवासी बहुल और दूरदराज के इलाकों में संघर्ष मुक्त और आत्मनिर्भर गांवों के लिए अपने दृष्टिकोण का प्रदर्शन किया है।

संस्थान की परियोजनाएं और उसके कार्य विशेष रूप से कृषि, जलवायु अनुकूल कृषि/वानिकी, आय सृजन और वित्तीय स्थिरता, जल और स्वच्छता, स्वास्थ्य और ज्ञान सह-निर्माण पर केंद्रित हैं और इन्हें बीड और गोंडा में सक्रिय रूप से दोहराया जा रहा है। दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से नाना जी ने ग्रामीण विकास के पांच लक्ष्य रखें जो भारत की जीवन शैली के अभिन्न अंग है। सतत विकास के लक्ष्य को संयुक्त राष्ट्र ने अडॉप्ट किया है। सतत विकास लक्ष्यों में एकात्म मानव दर्शन का बोध होता है।

उद्घाटन सत्र का संचालन करते हुए डीआरआई के महाप्रबंधक श्री अमिताभ वशिष्ठ ने बताया कि इस सम्मेलन के माध्यम से एसडीजी को प्राप्त करने में अपने प्रयासों के प्रमुख एजेंडे के रूप में मजबूत, टिकाऊ और संतुलित विकास को बढ़ावा देने के लिए यह विमर्श सकारात्मक दिशा के रूप में कार्य करेगा।

अपने उद्बोधन में सतना सांसद श्री गणेश सिंह ने कहा कि पिछले 3 वर्षों से लगातार सतत विकास पर चर्चा हो रही है। पूरी दुनिया में कई ऐसी समस्याएं हैं जो एक जैसी हैं और इन समस्याओं का कहीं ना कहीं हल निकालना चाहिए, सतत् विकास होना चाहिए, जो प्रकृति के अनुकूल हो। चित्रकूट पर उन्होंने कहा कि चित्रकूट संतों की भूमि रही है प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण है। 90 के दशक में नानाजी चित्रकूट आए उन्होंने प्रकृति का पूरा ध्यान रखा। जीवन और समाज निर्माण के विभिन्न बिंदुओं पर उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में काम खड़ा किया।

मध्य प्रदेश की पूर्व मंत्री सुश्री उषा ठाकुर ने कहा कि हम इस आयोजन के माध्यम से भारत-भारतीयता और सनातन के तौर-तरीकों को यहां सीखने का प्रयास कर रहे हैं। जब तक विश्व सनातन वैदिक तौर तरीकों की ओर नहीं मुड़ेगा जब तक सुख शांति की कल्पना नहीं हो सकती। नानाजी की पुण्यतिथि मनाने के पीछे उनके कृतित्व और उन्होंने जो जिया है, जो सोच उनकी रही है, उसे धरातल पर उतरना हम सब की जिम्मेदारी है।

इस अवसर पर जिंदल स्कूल आफ गवर्नमेंट एंड पब्लिक पॉलिसी के कार्यकारी डीन वेस्टइंडीज के प्रोफेसर नरेश सिंह, डॉ. शेषाद्री चारी, श्री गजानन डांगे, बांदा सांसद श्री आरके सिंह पटेल द्वारा भी अपना उद्बोधन दिया गया।

तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन सतत विकास के लक्ष्य के अन्तर्गत - एसडीजी-2 (शून्य भुखमरी) व एसडीजी-4 (गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा) पर आयोजित किया गया। वहीं विविध सेमिनारों व कार्यशालाओं के अन्तर्गत भारतीय प्राकृतिक खेती एवं मानव स्वास्थ्य, पौधों की किस्म और किसानों के

अधिकारों का संरक्षण अधिनियम, मातृशक्ति के उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण में पोषक अनाजों का महत्व, कृषक उत्पादक संगठन में कार्यकर्ताओं में कौशल संवर्धन एवं उद्यमिता के अलावा महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह की भूमिका पर अलग-अलग स्थानों पर सेमिनार आयोजित हुए। दीनदयाल परिसर के लोहिया सभागार, बाल कला भवन एवं विवेकानंद सभागार में पांच अलग-अलग स्थानों पर सेमिनार व कार्यशाला का आयोजन हुआ।

इस आयोजन में कई विश्वविद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं की भागीदारी के साथ देशभर से प्रमुख विषय विशेषज्ञ चित्रकूट पधारे। वहीं 26 फरवरी को छात्र शक्ति द्वारा नानाजी देशमुख स्मृति विशाल तिरंगा यात्रा ग्रामोदय विश्वविद्यालय से भरत घाट तक निकाली गई।

नानाजी ने गांव के विकास में जनता की पहल और सहभागिता को ही अपना ध्येय माना, इसलिए पिछले 13 वर्षों से उनकी पुण्य तिथि का कार्यक्रम जन सहभागिता से ही संपन्न होता आ रहा है। नानाजी की पुण्य तिथि के अवसर पर प्रत्येक वर्ष ग्रामीणजनों को कृषि, पशु पालन, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वरोजगार, विवाद मुक्त ग्राम और अन्य क्षेत्रों की विविध योजनाओं एवं प्रगति की जानकारी देने हेतु कार्यक्रम आयोजित होते आ रहे हैं। इसीलिए उनकी 14वीं पुण्यतिथि का कार्यक्रम भी जन सहभागिता से ही संपन्न हुआ।

पोषक अनाज "श्री अन्न" प्रदर्शनी

प्रदर्शनी में 13 केवीके सहित प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बनाये गए उत्पादों का किया गया प्रदर्शन

चित्रकूट 26 फरवरी / राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की पुण्यतिथि पर दीनदयाल परिसर चित्रकूट में पोषक अनाज "श्री अन्न" प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

तदोपरांत सभी अतिथियों द्वारा प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया। प्रदर्शनी के प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र चित्रकूट के वैज्ञानिक श्री विजय गौतम ने बताया कि पोषक तत्वों का भंडार माने जाने वाले मोटे अनाज की खपत लगातार बढ़ती नजर आ रही है। यही नहीं, वर्ष 2023 इंटरनेशनल इयर ऑफ मिलेट्स के रूप में मनाया गया। लोग मोटे अनाज के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं और इसे अपने आहार में शामिल कर रहे हैं। मोटे अनाज गेहूं और चावल की तुलना में सस्ते होने के साथ-साथ उच्च प्रोटीन, फाइबर, विटामिन तथा आयरन आदि की उपस्थिति के चलते पोषण हेतु बेहतर आहार होते हैं।

इस प्रदर्शनी में कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां, गनीवां, छतरपुर, रीवा, कटनी, उमरिया, नरसिंहपुर, शहडोल, दमोह, डिण्डौरी, सीधी, सागर, पन्ना के साथ-साथ जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के खाद्य विज्ञान विभाग, पशु पालन एवं डेयरी विभाग सतना, मध्य प्रदेश जैव विविधता बोर्ड भोपाल द्वारा संकटग्रस्त प्रजातियों के प्रदर्शन के साथ "श्री अन्न" के मूल्यवर्धित व जैविक कीटनाशकों का प्रदर्शन, मशरूम के मूल्य संवर्धित उत्पाद एवं जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट द्वारा आत्मनिर्भर तथा स्वावलम्बी बनाने हेतु संचालित किए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी के साथ-साथ प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बनाये गए उत्पादों का प्रदर्शन किया गया।

इसके अलावा विविध जानकारियों को एकत्र कर लोगों को जन जागरूक करने हेतु विशिष्ट प्रदर्शनी लगाई गई है। इस अवसर पर राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (NCPCR) द्वारा बाल अधिकारों के सार्वभौमिकता और अखंडता के सिद्धांतों पर 0 से लेकर 18 वर्ष की आयु वर्ग के सभी बच्चों की समान सुरक्षा को ध्यान में रखकर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

सतत् विकास के लक्ष्यों पर आयोजित तृतीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विद्वतजनों ने रखे अपने विचार

चित्रकूट 26 फरवरी 2024/ राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की चौदहवीं पुण्य तिथि पर आयोजित कार्यक्रमों की श्रंखला में दूसरे दिन संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्य एसडीजी-2 भुखमरी की समाप्ति एवं एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर लोहिया सभागार में एसडीजी-2 भुखमरी की समाप्ति के सत्र सतत कृषि और अमृत काल एवं टिकाऊ कृषि और आजीविका के संदर्भ में हम क्या उगाते हैं, हम कैसे उगाएं, हम क्या खाते हैं पर अपनी बात रखते हुए पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने कहा कि सतत कृषि के लिए परिवेश को ध्यान में रखकर पेस्टिसाइड के उपयोग को प्रबंधित करने की जरूरत है। फसलों का जो विविधीकरण होना चाहिए वह नहीं हुआ है, फसलों में विविधीकरण की आवश्यकता है। सूक्ष्म सिंचाई की व्यवस्था होनी चाहिए। 2047 तक हम पानी के 80 प्रतिशत उपयोग को 40 प्रतिशत तक लेकर आएंगे।

दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष एवं सेमिनार के संयोजक श्री वसन्त पंडित ने कहा कि हमारी परंपरा में पुरुष पहले भोजन करता है फिर बच्चे और सबसे बाद में महिलाएं। इसलिये महिलाओं में कुपोषण ज्यादा है। मिलेट्स उगाने पर जोर देना चाहिये यह भुखमरी की समस्या का अच्छा समाधान है। पूर्व आईएएस श्री दीपक खांडेकर ने कहा कि सांवा, कोदो, काकून, रागी बाजरा ये फसलें फिर से आनी चाहिये। ये मोटे अनाज ही इस सत्र का सार संक्षेप है और यही जीरो हंगर लायेगा। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय की पूर्व प्राध्यापक डॉ. ओम गुप्ता ने दलहनी फसलों और उसकी न्यूट्रीशन वैल्यू पर अपना व्याख्यान देते हुए कहा जो खाओ वो उगाओ- वही उगाओ जो खाओ।

पूसा अनुसंधान नई दिल्ली के बागवानी विशेषज्ञ डॉ. अमित गोस्वामी ने कहा कि हम हर तरह के फल सब्जियां उगा तो रहे हैं लेकिन हम अपने आहार में बैलेंस डाइट नहीं ले पा रहे हैं। हमें स्वस्थ रहने के लिए अपने खान-पान में परिवर्तन करने की जरूरत है। सम्मेलन में स्थानीय कृषकों ने भी अपने-अपने अनुभवों को बताया।

क्षेत्रीय युवा किसान श्री नरेंद्र प्रताप पटेल ने मिलेटस की खेती से बढ़ी हुई आमदनी का जिक्र किया। श्री दीपक जायसवाल ने प्राकृतिक खेती में कम उत्पादन लागत का जिक्र किया। इन किसानों ने चित्रकूट क्षेत्र में कार्यरत कृषि

विज्ञान केन्द्र के तकनीकी एवं सतत् मार्गदर्शन को इसका श्रेय दिया। लोहिया सभागार के दूसरे तल पर आयोजित एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के अंतर्गत चल रहे सम्मेलन में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष श्री प्रियंक कानूनगो ने कहा कि धार्मिक संस्थाओं में खास तौर पर मदरसों में जो शिक्षा दी जाती है वह कितना उचित है। आज मदरसों में एक करोड़ 10 लाख बच्चे क्या सीख रहे हैं, दारुल उलूम देवबंद स्कूल केवल एक प्रोफेशनल कोर्स चला रहा है बाकी केवल धर्म और संप्रदाय की शिक्षा दी जा रही है। इस पर सरकार को ध्यान देने की जरूरत है।

गुरुकुल गुजरात के आचार्य श्री संजीव शर्मा ने कहा कि भारत की सामाजिक व्यवस्था के अनुसार शिक्षा होनी चाहिए। भारत में जो प्राचीन पद्धति थी उसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, धर्म और पर्यावरण जैसे विषय सम्मिलित होते थे।

श्री शेषाद्री चारी ने कहा कि क्या उच्च शिक्षा संस्थान क्वालिटी एजुकेशन पर कार्य कर रहे हैं यह विचार का विषय है। सरकार शिक्षा पर अधिक बजट नहीं रख रही है जबकि यह तय हुआ था कि देश की कुल जीडीपी का 6% शिक्षा पर जाना चाहिए किंतु अभी तक तीन प्रतिशत से अधिक कभी नहीं रखा गया।

दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन ने कहा कि नानाजी स्वयं एक शिक्षा शास्त्री थे उन्होंने नन्हीं दुनिया जैसा अभिनव शिक्षा परिसर तैयार कराया जहां बच्चा प्रकृति की गोद में आसपास परिवेश से सीखेगा।

आईआईटी रुड़की के प्रो आशीष पांडे ने कहा कि छात्रों में कला, कौशल और व्यवहारिक ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। केवल डिग्री धारकों को बढ़ाने से कुछ नहीं होगा।

पर्यावरण विद् एवं वैज्ञानिक डॉ. रविकांत पाठक ने कहा कि 'सा विद्या या विमुक्तये' भारतीय शिक्षा का ध्येय वाक्य रहा है। आज भी यही आवश्यक है कि हम स्कूलों में मनुष्य में आंतरिक विकास से संबंधित पाठ्यक्रम तैयार करें। हम कुछ भूल गए हैं उसे पुनः स्मरण करें और शिक्षा ऐसी तैयार करें कि दुखों से मुक्ति मिल सके, जीवन में आनंद का मार्ग प्रशस्त हो सके, अंतर्मन में समृद्धि आ सके।

महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. भरत मिश्रा ने सतत् विकास के लक्ष्य को नानाजी के कृतित्व के अनुरूप मानते हुए कहा कि नानाजी देशमुख युगानुकूल सामाजिक पुनर्रचना के व्यावहारिक शिल्पी थे। वे गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा, समय अनुकूल शिक्षा, स्वावलंबन और आत्मविश्वास पूर्ण शिक्षा के हिमायती थे। नानाजी का मानना था कि शिक्षा के माध्यम से हम समाज के अनछुए पहलुओं को स्पर्श करते हुए राष्ट्र का नवनिर्माण कर सकते हैं।

महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका विषय पर संगोष्ठी

चित्रकूट/ जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट द्वारा नाना जी की 14वीं पुण्यतिथि पर महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका विषय पर संगोष्ठी का आयोजन दीनदयाल परिसर स्थित बाल कला भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि सुश्री उषा ठाकुर, पूर्व पर्यटन व संस्कृति मंत्री मध्य प्रदेश शासन, श्री कृष्ण मोहन मोघे पूर्व सांसद खरगौन, श्री शिवमोहन मिश्र देव संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. रज्जन द्विवेदी पोस्ट डॉक्टोरल फैलो आई सी एस एस आर, श्री विकास कुमार सहायक प्रबंधक ड़ी आई सी, श्रीमती सन्ध्या उपेंद्र कुलकर्णी एवं जन शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री अनिल कुमार सिंह द्वारा दीप प्रज्ज्वलन द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए निदेशक जन शिक्षण संस्थान ने बताया कि स्वयं-सहायता समूह भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण और गरीबी उन्मूलन के प्रभावी आधार के रूप में उभरे हैं। समाज में महिलाओं के वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने व उन्हें सक्षम बनाने जिससे कि वह अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वयं ले सकें और परिवार और समाज में अच्छे से रहकर आत्मनिर्भर एवम स्वावलम्बी बन सकें।

श्रीमती सन्ध्या उपेंद्र कुलकर्णी ने कहा कि आर्थिक सशक्तिकरण, कौशल विकास, सामाजिक एकजुटता और ऋण तक पहुंच को बढ़ावा देकर स्वयं सहायता समूह महिलाओं को अपने जीवन पर नियंत्रण रखने और अपने समुदायों के विकास में योगदान करने में सक्षम बनाते हैं।

श्री शिवमोहन मिश्रा ने कहा कि महिला स्वयं सहायता समूह महिलाओं को बचत के माध्यम से उन्हें बचत करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, ऋण के माध्यम से महिला स्वयं सहायता समूह महिलाओं को ऋण प्रदान करते हैं व प्रशिक्षण के माध्यम से स्वयं सहायता समूह महिलाओं को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान करते हैं जिससे वे आर्थिक रूप से सशक्त बनतीं हैं।

डॉ. रज्जन द्विवेदी ने बताया कि स्वयं सहायता समूह, समरूप ग्रामीण निर्धनों द्वारा स्वेच्छा से गठित एक समूह है जिसमें समूह के सदस्य अपने आप से जितनी भी बचत आसानी से कर सकते हैं उसका अंशदान उत्पादक, उपभोग अथवा आपातकालीन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ऋण के रूप में देने के लिए परस्पर सहायक होते है।

श्री विकास कुमार द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार एवं केंद्र सरकार द्वारा जिले में संचालित की जा रही विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान कर उनसे लाभान्वित होकर आत्मनिर्भर बनने पर जोर दिया।

श्री कृष्णमुरारी मोघे ने भारत सरकार द्वारा समाज के विभिन्न समुदायों एवं विशेषकर मातृशक्ति के शक्तिकरण हेतु किये जा रहे कार्यों की जानकारी प्रदान की और मातृशक्ति को उनसे लाभान्वित होने पर जोर दिया।

अध्यक्षीय उद्बोधन करते हुए सुश्री उषा ठाकुर ने कहा कि महिला राष्ट्र की आधार शक्ति है आप अपनी निहित शक्तियों को जाग्रत करिए और उन्हें पहचानिए। दुनिया का कोई भी ऐसा कार्य नहीं है जिसे आप सर्वाधिक बेहतर तरीके से नहीं कर सकती हैं। ईश्वर ने जब सृष्टि की रचना की तो उन्होंने शक्ति का केंद्र मातृशक्ति को ही बनाया। यदि हम देखें तो दुर्गा शक्ति का केंद्र है, तो विद्या का केंद्र सरस्वती है और वहीं धन की देवी लक्ष्मी को कहा जाता है। आप सभी मातृशक्ति इन तीनों देवियों के संयुक्त विग्रह को आत्मसात कर विश्व गुरु भारत के सपने को यथार्थ में बदल सकती हैं। भारत का इतिहास मातृशक्ति के कार्यों से भरा पड़ा है भारत और भारतीयता की ताकत आध्यात्मिकता है। आप अपने संस्कारों और विचारों को बेहतर बनाने हेतु कार्य करते हुए स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों को अपने आजीविका का साधन बनाकर आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनिए।

कार्यक्रम में प्रतिभाग कर रहे प्रतिभागियों में श्रीमती अंजली भारद्वाज, श्रीमती रेनू, श्रीमती अनुपमा, श्रीमती स्वेता, श्रीमती महिमा, श्रीमती दीप कुमारी सहित कई अन्य ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में 10 स्वयं सहायता समूहों एवं जन शिक्षण संस्थान के 75 अनुदेशकों सहित लगभग 305 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने एवं मातृशक्ति के स्वास्थ्य पर कार्यशाला में विशेषज्ञों ने रखे विचार

नानाजी की पुण्यतिथि पर आयोजित विभिन्न संगोष्ठी एवं कार्यशाला की विचार श्रंखला में दूसरे दिन दीनदयाल परिसर के विवेकानन्द सभागार में प्रथम सत्र में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने एवं द्वितीय सत्र में पौध किस्म संरक्षण और तृतीय सत्र में मातृशक्ति के उत्तम स्वास्थ्य व पोषण में पोषक तत्व का महत्व पर विषय विशेषज्ञों द्वारा विस्तृत जानकारी रखी गई।

प्रथम सत्र में डॉ. शिव शंकर सिंह, पदमश्री उमाशंकर पांडेय, श्री श्याम बिहारी गुप्त एवं मोहम्मद असलम खान ने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों को विस्तार से बताया और कैसे प्राकृतिक खेती करके मिट्टी में जीवाणुओं की संख्या बढ़ाकर उत्पादन को बढ़ा सकते हैं।

द्वितीय सत्र में पौधों की किस्म का संरक्षण एवं पंजीयन कृषक अधिकार प्राधिकरण के सत्र में डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, अध्यक्ष और डॉ. डी.के. अग्रवाल, रजिस्ट्रार जनरल, श्री यूके दुबे, डिप्टी रजिस्ट्रार, डॉ. रवि प्रकाश एवं श्री राज सिंह कुशवाहा ने विस्तार से कैसे देसी किस्म की खेती करें, उन्हें संरक्षित रखे, पंजीयन करें साथ ही किसानों से प्रत्यक्ष रूप से वार्ता की एवं अनुभव साझा किया।

तृतीय सत्र में डॉ. आर.एस. ठाकुर ने मातृशक्ति के उत्तम स्वास्थ्य, पोषक अनाज के महत्व को विस्तार से बताया। जिसमें कैसे मोटे अनाजों के उत्पाद तैयार करें जैसे रागी लड्डू, रागी बिस्किट, कोदो चावल आदि उत्पाद बनाने पर विस्तार से बताया गया।

'कृषक उत्पादक संगठन के कार्यकर्ताओं में कौशल संवर्धन एवं उद्यमिता' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला

चित्रकूट/ 'भारत रत्न' राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की 14वीं पुण्यतिथि पर आयोजित तीन दिवसीय कार्यक्रमों की श्रृंखला में 'कृषक उत्पादक संगठन के कार्यकर्ताओं में कौशल संवर्धन एवं उद्यमिता' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला हुई, जिसका शुभारम्भ एवं दीप प्रज्ज्वलन श्री अभय महाजन संगठन सचिव दीनदयाल शोध संस्थान, श्री निखिल प्रभाकर मुंडले उपाध्यक्ष दीनदयाल शोध संस्थान, डॉ. भरत मिश्रा कुलपति महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, श्री अमिताभ वशिष्ठ महाप्रबंधक दीनदयाल शोध संस्थान तथा सौ. अनुजा परचुरे सदस्य दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किया गया।

मंचासीन अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ, रामनामी गमछा एवं स्मृति चिन्ह देकर किया गया। उसके उपरांत दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मधुमक्खी पर लिखी हुई पुस्तक का विमोचन किया एवं कृषक उत्पादक संगठन द्वारा निर्मित उत्पाद टोमैटो केचअप और मल्टीग्रेन आटा उत्पाद का शुभारंभ किया गया।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में मंच संचालन श्री उत्तम कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया। सत्र की अध्यक्षता श्री राजेश महाजन सचिव दीनदयाल शोध संस्थान ने की। जिसमें मुख्य अतिथि सौ. अनुजा परचुरे एवं मुख्य वक्ता श्री अनिल शुक्ला तथा डॉ. प्रभाशंकर शुक्ला उपस्थित थे। इन सभी मान्यवरों ने कृषक उत्पादक संगठन के कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी एवं एफ.पी.ओ. के लेखा एवं वित्तकार का प्रबन्धन विषय पर अपने-अपने विचार साझे किए।

दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मधुमक्खी पर लिखी हुई पुस्तक का विमोचन किया एवं कृषक उत्पादक संगठन द्वारा निर्मित उत्पाद टोमैटो केचअप और मल्टीग्रेन आटा उत्पाद का शुभारंभ किया गया

द्वितीय सत्र में कृषि उत्पाद चयन एवं बाजार प्रबन्धन तथा एफ.पी.ओ. में खेती से उद्गम के अवसर विषय पर मंच संचालन डॉ. सुनील दुबे ने किया, अध्यक्षता श्री रामकृष्ण

तिवारी ने की। जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. विक्रमा प्रसाद पाण्डेय एवं मुख्य वक्ता डॉ. चन्द्रमणि त्रिपाठी रहे, इन्होंने श्रद्धेय नानाजी के विचारों को दोहराते हुए गांव को कैसे स्वावलम्बी बनाया जाए तथा एफ.पी.ओ. के विषय पर मार्गदर्शन किया।

द्वितीय सत्र के समापन अवसर पर श्री अतुल जैन, प्रधान सचिव, दीनदयाल शोध संस्थान ने श्रद्धेय नानाजी को याद करते हुए उनके मूल मंत्र को साझा करते हुए कृषकों को बताया कि समाज में अपनी भूमिका तय करना जरूरी है तथा सहकारिता की भावना होना अनिवार्य है।

कार्यशाला के तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री विपिन विराट ने की, जिसमें मुख्य अतिथि श्री राजेश खंडेलवाल तथा श्री राकेश नागपाल एवं श्री के.के. शर्मा मुख्य वक्ता रहे। इन सभी मान्यवरों ने एफ.पी.ओ., सी.बी.बी.ओ. प्रबंधन लागत के आवेदन, लागत राशि का उपयोग एवं वित्तीय सहयोग एवं ऋण के विषय कृषकों को वित्तीय जानकारी प्रदान की।

इस सत्र में डॉ. राजेन्द्र सिंह ठाकुर ने भारत सरकार की खाद्य प्रसंस्करण की योजना के बारे में कृषकों को जानकारी दी। तृतीय सत्र के समापन अवसर पर श्री वसन्त पंडित कोषाध्यक्ष दीनदयाल शोध संस्थान ने कहा कि भारत सरकार भी नाना जी की सोच के अनुसार कार्य कर रही है। दीनदयाल शोध संस्थान सभी कृषकों को मदद करने के लिए हमेशा तत्पर है। कार्यशाला के चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. उपेन्द्र कुलकर्णी ने की, इस सत्र में मुख्य मार्गदर्शन श्रीमती सुरुचि नागपाल और मुख्य वक्ता डॉ. अमित गोस्वामी जी रहे, तथा सत्र का संचालन डॉ. राजीव सिंह ने किया, इस सत्र में प्रगतिशील कृषक श्री ओम प्रकाश पाण्डेय ने एफ.पी.ओ. में आने वाली समस्याओं पर चर्चा की तथा श्री ताराचन्द्र बेल ने प्राकृतिक खेती द्वारा कृषकों को कैसे ज्यादा आर्थिक लाभ हो। इसका मूलमंत्र प्रदान किया। इस सत्र के समापन पर डॉ. उपेन्द्र कुलकर्णी ने एफ.पी.ओ. को "श्री अन्न" उत्पाद प्रसंस्करण में काम करने का सुझाव दिया।

कृषक उत्पादक संगठन के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, लेखाकार, सी.बी.बी.ओ. प्रतिनिधि, कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं प्रभारियों के द्वारा श्री राकेश नागपाल की अध्यक्षता एवं श्री के.के. शर्मा विषय विशेषज्ञ के रुप में उपस्थिति के साथ कुशल संचालन एवं सरल प्रक्रिया के साथ-साथ बाजार मूल प्रबन्धन में एक कामकाजी बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यकताओं के जिज्ञासा, समाधान एवं कंपनियों के स्वावलम्बी बनने की दिशा में विन्दुवार वृहद चर्चा की गई। इस महत्वपूर्ण बैठक में उपरोक्त दायित्वधारी 26 कार्यकर्ता उपस्थित रहे, साथ ही जवाहर लाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र छतरपुर के वैज्ञानिक डॉ. राजीव सिंह के नेतृत्व में उनके अन्तर्गत संचालित कृषक उत्पादक संगठन के 18 कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

यूएन के सतत विकास लक्ष्य 'जीरो हंगर' एवं 'क्वालिटी एजुकेशन' पर तृतीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

चित्रकूट 27 फरवरी 2024/ राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की 14वीं पुण्यतिथि पर संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लक्ष्य एसडीजी-2 भुखमरी की समाप्ति एवं एसडीजी-4 गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर चित्रकूट में चल रहे तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन 27 फरवरी को दीनदयाल परिसर के विवेकानन्द सभागार में हुआ। समारोह सत्र के शुभारंभ चित्रकूट क्षेत्र से पधारे सभी संत समाज का अतिथियों द्वारा स्वागत सम्मान से हुआ। जिसमें संत समाज से मंडला से मदन मोहन गिरी महाराज, रामजी दास जी महाराज, मदन गोपाल दास जी महाराज, दिव्य जीवन दास जी महाराज, सीता शरण दास जी महाराज, नयागांव आश्रम से प्रपन्नाचार्य जी महाराज, राम हृदय दास जी, पवन बाबा, केशव जी महाराज, गायत्री शक्तिपीठ से डॉ. रामनारायण त्रिपाठी सहित सैकड़ों की संख्या में संत वृंद उपस्थित रहे।

दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष एवं सम्मेलन के संयोजक श्री वसंत पंडित ने बताया कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी) के 17 बिंदु है। सतत विकास को लेकर यह आयोजन चित्रकूट में हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने 17 बिंदुओं को लेकर वर्ष 2015 से 2030 तक के लक्ष्य निर्धारित किए हैं। सतत विकास के इन 17 लक्ष्यों में से एसडीजी 2 एवं 4 पर यहां चिंतन हुआ है। आगे भी कई ऐसे कार्य हैं जिन्हें करना है। वर्ष 2030 तक एसडीजी पर काम चलेगा। इससे वर्ल्ड एसडीजी फोरम को स्थाई रूप प्रदान करने में सहयोग मिलेगा।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक ग्लोबल फोरम तैयार किया गया है। जिसमें ग्रामोदय से सर्वोदय और लोकल टू ग्लोबल भाव के साथ जो सोच नाना जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की रही, उसी सोच के अनुरूप वर्ल्ड एसडीजी फोरम की स्थापना हुई है।

आरआईएस मेंबर डॉ. शेषाद्री चारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पिछले तीन वर्षों से वर्ल्ड एसडीजी फोरम के रूप में प्रयोग कर रहे हैं उसके अंतर्गत हर वर्ष सतत विकास के लक्ष्यों के अंतर्गत अलग-अलग लक्ष्यों पर गहन मंथन विमर्श करते हैं। एकात्म मानव दर्शन के आधार पर जो रचनाएं होनी चाहिए उसके आधार पर प्रत्यक्ष काम चित्रकूट में देखने को मिलता है। इसीलिए सतत विकास के 17 लक्षणों में से दो लक्ष्यों पर सम्मेलन के लिए सबसे उपयुक्त स्थान चित्रकूट को चुना है।

दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन ने कहा कि पिछले तीन दिनों में जो भी कार्यशाला एवं संगोष्ठी हुई है उनमें सबसे खास यह रही है कि महिलाओं का योगदान कहीं न कहीं पुरुषों से कम नहीं रहा। सबने घूंघट से बाहर आकर हर परिचर्चा में बढ़ चढ़कर भागीदारी की और अपने कृषि और सामाजिक अनुभवों को सबके समक्ष रखा। दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र पराक्रम आदित्य ने कहा कि व्यक्ति निर्माण के द्वारा समाज में परिवर्तन आएगा। इस प्रकार के सभी आयोजन व्यक्ति निर्माण की पाठशाला है।

म.प्र. शासन के मंत्री श्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा कि 60 वर्ष के बाद राजनीति छोड़कर समाज जीवन में अपना सर्वस्व लगाकर भारतीय राजनीति में सर्वोच्च उदाहरण नानाजी ने प्रस्तुत किया है। समापन अवसर पर वेस्टइंडीज के प्रो नरेश सिंह द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन भी हुआ। कार्यक्रम के अंत में श्री महंत रामजी दास महाराज जी द्वारा आशीर्वचन और शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इनकी रही उपस्थिति

समापन अवसर पर मध्य प्रदेश शासन के मंत्री सर्वश्री नरेंद्र शिवाजी पटेल, सतना सांसद गणेश सिंह, इंदौर के पूर्व सांसद कृष्ण मुरारी मोघे, सीधी विधायक श्रीमती रीति पाठक, जबलपुर विधायक श्रीमती शशि तिवारी, पूर्व मंत्री राम खेलवान पटेल, सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के डॉ. बीके जैन, विश्व बैंक के सलाहकार विष्णु दरबारी, पूर्व आईएएस दीपक खांडेकर, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. भरत मिश्रा, इंदौर से राजेश खंडेलवाल, डॉ. प्रमोद नेमा, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की सदस्य डॉ. दिव्या गुप्ता, दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र पराक्रम आदित्य, उपाध्यक्ष श्री उत्तम बनर्जी, श्री निखिल मुंडले, प्रधान सचिव श्री अतुल जैन, महाप्रबंधक श्री अमिताभ वशिष्ठ सहित दीनदयाल शोध संस्थान की सभी प्रबंध मंडल के सदस्य देश भर से कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

नानाजी देशमुख उत्कृष्ट कृषक सम्मान-2024

सुमती ताई सुकलीकर महिला सशक्तिकरण सम्मान

राजा बाई देशमुख महिला स्वावलंबन सम्मान

प्रगतिशील महिला–पुरुष कृषकों को नानाजी के श्रद्धांजलि समारोह में किया गया सम्मानित

चित्रकूट/ भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी की 14वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि समारोह में जिले के प्रगतिशील महिला-पुरुष कृषकों को कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां के माध्यम से भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख उत्कृष्ट कृषक सम्मान, सुमती ताई सुकलीकर महिला सशक्तिकरण सम्मान, राजा बाई देशमुख महिला स्वावलंबन सम्मान से सम्मानित किया गया। जिसमें सतना जिले के ऐसे उन्नतशील कृषक जिन्होंने खेती को लाभ का धंधा बनाने, परंपरागत पोषकीय अनाज उत्पादन, पशु पालन, परंपरागत किस्मों का संरक्षण, जलवायु अनुकूल कृषि आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया है, उन कृषकों को यह सम्मान मंचासीन अतिथि मध्य प्रदेश सरकार के मंत्री श्री नरेंद्र शिवाजी पटेल, सतना सांसद श्री गणेश सिंह, सीधी विधायक श्रीमती रीति पाठक, संत समाज से पूज्य संत राम जी दास जी महाराज, कामदगिरि प्रमुख द्वार से मदन गोपाल दास जी महाराज, दिव्य जीवन दास जी महाराज, सीताशरण दास जी, सती अनुसूईया आश्रम से पवन बाबा, गायत्री शक्तिपीठ से डॉ. रामनारायण त्रिपाठी, मंडला से मदन मोहन गिरी जी महाराज एवं राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की सदस्य डॉ. दिव्या गुप्ता एवं दीनदयाल शोध संस्थान प्रबंध मंडल की सदस्य सौ. अनुजा ताई परचुरे एवं श्रीमती कुमुद सिंह द्वारा प्रदान दिया गया।

कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां द्वारा ग्रामीण अंचल में बालिकाओं को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करने हेतु श्रीमती मैना सिंह बरहठा पछीत, सामाजिक कार्यों में सहभागिता हेतु ग्रामीण महिलाओं को प्रेरित करने के लिए श्रीमती कमलेश कुमारी गौतम बरौंधा, महिला कृषकों को कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु

श्रीमती पुष्पा सोनी, ताला अमरपाटन को 'सुमती ताई सुकलीकर महिला सशक्तिकरण सम्मान' दिया गया।

वहीं विषम परिस्थितियों में परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने हेतु सराहनीय एवं अनुकरणीय कार्य करने के लिए श्रीमती शुभा मवासी देवलहा एवं श्रीमती फुला देवी कन्दर को राजा बाई देशमुख महिला स्वावलंबन सम्मान प्रदान किया गया।

'नानाजी देशमुख उत्कृष्ट कृषक सम्मान-2024' के अन्तर्गत गोपालन आधारित प्राकृतिक खेती हेतु श्री दीपेंद्र जायसवाल हिरौंदी, पोषक अनाजों की खेती हेतु श्री लालमन कुशवाहा खुजा विहटा, फसल विविधीकरण हेतु श्री नरेन्द्र प्रताप सिंह अमहा टेढ़ी पतवनिया, जैव विविधता संरक्षण हेतु श्री चन्दन सिंह सोहास सोहावल, 1.5 एकड़ समेकित खेती पद्धति के लिए श्री इंद्रपाल कुशवाहा, पगार कला, सब्जी व मसाला उत्पादन पर कार्य हेतु श्रीमती सुमित्रा देवी कुशवाहा लालपुर अमरपाटन, बकरी पालन के लिए श्रीमती चुनकी सतनामी मोटवा भरगवां, मशरूम उत्पादन में श्रीमती पूनम कुशवाहा डोलनी पिपरीकला, सीमित संसाधनों में अधिक आय सृजन हेतु श्री लक्ष्मी प्रसाद कुशवाहा बम्होरी तिलाई रामपुर बघेलान, वर्षा जल संरक्षण उपायों हेतु श्री रामकुशल कोल करिया खोढ़री तथा सामाजिक कार्यों में पहल व सहभागिता के लिए श्री कृष्ण कुमार गौतम पटनी पटनाखुर्द को राष्ट्रऋषि नाना जी देशमुख उत्कृष्ट कृषक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नानाजी की चौदहवीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि के साथ हजारों लोगों ने किया प्रसाद ग्रहण

विविध क्षेत्रों से नानाजी के प्रति आस्था रखने वाले लोगों ने चित्रकूट पहुंचकर नानाजी को दी श्रद्धांजलि

चित्रकूट 27 फरवरी 2024/ भारत रत्न नानाजी देशमुख के स्मृति चिन्ह के रूप में दीनदयाल परिसर चित्रकूट में श्रद्धा स्थल पर उनकी 14वीं पुण्यतिथि 27 फरवरी को देश भर के विविध क्षेत्रों से समान उद्देश्य वाले कार्यकर्ताओं, जन प्रतिनिधियों एवं नानाजी के प्रति आस्था रखने वाले लोगों ने चित्रकूट पहुँच कर नानाजी के श्रद्धा स्थल पर पुष्पांजलि अर्पित की। इनके अलावा संस्थान के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं और चित्रकूट क्षेत्र के लोगों द्वारा विधि-विधान पूर्वक श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

एक दिन पूर्व ही नानाजी को श्रद्धांजलि देने वाले क्षेत्रीय ग्रामीण दीनदयाल परिसर में आने लगे थे। प्रातः से ही चित्रकूट क्षेत्र के ग्रामीण लोग आना शुरू हो गए और पंडित

दीनदयाल पार्क में बने नानाजी के श्रद्धा स्थल पर पुष्पांजलि का दौर चलता रहा, वहीं दूसरी ओर श्रीरामचरितमानस पाठ का हवन पूजन कार्यक्रम में भी लोग अपनी आहुति पूर्ण कर रहे थे।

दीनदयाल परिसर के ग्राउंड में भंडारा प्रसाद का कार्यक्रम प्रातः 10 बजे से साधु-संतों के प्रसाद से प्रारंभ होकर अनवरत देर शाम तक चलता रहा। जिसमें हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। भण्डारा के दौरान विवेकानंद सभागार में ग्रामोदय विश्वविद्यालय एवं सुरेन्द्रपॉल विद्यालय के संगीत विभाग एवं बच्चों द्वारा भजनों की प्रस्तुति की गई।

सियाराम कुटीर में भी हुआ पुष्पार्चन

देशभर के कई स्थानों से नानाजी से जुड़े हुए तथा उनके कार्य के प्रति आस्था रखने वाले लोगों ने चित्रकूट आकर नानाजी के आवास सियाराम कुटीर में भी जाकर उनको श्रद्धा सुमन अर्पित किए। संत महंतों ने भी अपनी पूरी टोली के साथ सियाराम कुटीर आकर नानाजी के कक्ष में पहुंचकर उनको याद किया।

एक मुट्ठी अनाज एवं एक रुपये के अंशदान से हुआ विशाल भंडारा

11 हजार परिवारों से 16 लाख रुपये का अंशदान तथा 66 क्विंटल अनाज का हुआ संकलन

नानाजी ने जिस तरह आम जनता की पहल और पुरुषार्थ से चित्रकूट में जो सामाजिक पुनर्रचना का काम खड़ा किया है उसमें प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी उन्होंने सुनिश्चित करने का प्रयास किया था, उसी भागीदारी को बरकरार रखने के लिए नानाजी की 14 वीं पुण्यतिथि 27 फरवरी को होने वाला विशाल भंडारा प्रसाद आम जनमानस के एक मुट्ठी अनाज एवं एक रूपये अंशदान सहयोग से संपन्न हुआ। जिसमें दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं की टोली मझगवां एवं चित्रकूट जनपद के अधिकांश गांव एवं घरों तक पहुँची, पुण्यतिथि कार्यक्रम का आमंत्रण दिया और सहयोग की अपेक्षा की। इसमें संत समाज ने भी बढ़-चढ़कर भागीदारी की। हरेक गांव में आस्था के प्रति सहभागिता का नजारा देखने लायक था। जिसमें 11 हजार 52 परिवारों से प्रत्यक्ष संपर्क के दौरान 16 लाख 75 हजार 72 रुपया का अंशदान तथा 66 क्विंटल अनाज का संकलन हुआ।

दीनदयाल आईटीआई चित्रकूट में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोलर तकनीशियन लैब का किया लोकार्पण

प्रशिक्षण प्राप्त कर युवा कार्बन मुक्त पर्यावरण बनाने में करेंगे मदद

चित्रकूट/ दीनदयाल औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र चित्रकूट में सोलर तकनीशियन लैब का लोकार्पण मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर सतना सांसद श्री गणेश सिंह, दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। लोकार्पण के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव को वर्तमान परिवेश के आधार पर सोलर तकनीशियन की उपयोगिता के बारे में बताया गया।

पीएम श्री नरेंद्र मोदी ने 2015 में "स्किल इंडिया" का नारा बुलंद करते हुए कहा था कि देश के कौशल विकास के लिए आईआईटी नहीं बल्कि आईटीआई की जरूरत है उसी समय से कौशल विकास मंत्रालय द्वारा आईटीआई के प्रदर्शन में सुधार लाने के लिए ग्रेडिंग सिस्टम पर विशेष जोर दिया गया ताकि उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले आईटीआई आदर्श संस्थानों के रूप में काम करें और दूसरे आईटीआई और प्रशिक्षण संस्थान इनका अनुसरण कर सकें।

> **दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि तकनीकी शिक्षा वर्तमान की बेहतर शिक्षा है। हर जगह सौर ऊर्जा का तेजी से प्रयोग हो रहा है। जिसके खराबी होने पर तकनीशियन की जरूरत पड़ती है, लेकिन जिस हिसाब से सौर ऊर्जा का प्रयोग हो रहा है।**

दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट द्वारा राष्ट्रीय एवं राज्य व्यावसायिक

प्रशिक्षण परिषद के अंतर्गत व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए संचालित दीनदयाल औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र चित्रकूट क्षेत्र के ग्रामीण लोगों को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों से जोड़कर रोजगारोन्मुखी शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए 2006 से कार्यरत है। जिसमें 8 व्यावसायिक ट्रेण्डों को इनमें शामिल किया गया है। जिनकी प्रशिक्षण अवधि 1 से 2 वर्ष तक है- इनमें इलेक्ट्रीशियन, फिटर, कोपा, कटिंग एंड सुइंग, ड्राफ्ट्समैन, प्लंबर, सोलर तकनीशियन आदि को शामिल किया गया है। इसके अलावा लघु अवधि के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं।

दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि तकनीकी शिक्षा वर्तमान की बेहतर शिक्षा है। हर जगह सौर ऊर्जा का तेजी से प्रयोग हो रहा है। जिसके खराबी होने पर तकनीशियन की जरूरत पड़ती है, लेकिन जिस हिसाब से सौर ऊर्जा का प्रयोग हो रहा है। उस हिसाब से तकनीशियन की भारी कमी है, लिहाजा रोजगार को पैदा करने के लिए दीनदयाल आईटीआई द्वारा बच्चों को सोलर तकनीशियन का प्रशिक्षण दिया जाएगा। जहां से प्रशिक्षण प्राप्त कर युवा एक तो कार्बन मुक्त पर्यावरण बनाने में मदद करेंगे दूसरा उनको रोजगार भी मिलेगा।

दीनदयाल आईटीआई के प्राचार्य श्री संजय दुबे ने बताया कि मध्य प्रदेश के सभी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में भारत रत्न नानाजी देशमुख के दीनदयाल शोध संस्थान का औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र सर्वोत्तम स्थान पर है। दीनदयाल औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र को भारत सरकार के कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय के अंतर्गत प्रशिक्षण महानिदेशालय (डीजीटी) ने गत वर्ष देश भर की आईटीआई में 26 वें स्थान पर तथा मध्य प्रदेश में पहले पायदान पर रखा है, दीनदयाल आईटीआई को 4 स्टार ग्रेडिंग प्राप्त है।

सोलर लैब के लोकार्पण अवसर पर दीनदयाल शोध संस्थान के उप महाप्रबंधक डॉ. अनिल जायसवाल, उद्यमिता विद्यापीठ के संयोजक श्री मनोज सैनी, सुरेन्द्रपॉल ग्रामोदय विद्यालय के प्राचार्य श्री मदन तिवारी, शैक्षणिक अनुसंधान केन्द्र के संयोजक श्री कालिका प्रसाद श्रीवास्तव एवं दीनदयाल औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षक श्री छोटेलाल, श्री नरेंद्र सिंह, श्री रितेश गुप्ता, श्री अभिषेक सिंह, श्री विकास सिंह एवं श्रीमती प्रीति सिंह उपस्थित रहे।

रामनाथ आश्रमशाला में शुभकामना कार्यक्रम

परीक्षोपरांत हाईस्कूल छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के लिए की गई कामना

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित रामनाथ आश्रमशाला के कक्षा 10वीं के छात्रों का परीक्षोपरांत विद्यालय के सभागार में शुभकामना कार्यक्रम द्वारा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर कृष्णादेवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय के प्राचार्य श्री गंगाराम यादव ने कहा विपरीत परिस्थितियों से डरना नहीं है। दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा प्राप्त सर्वांगीण विकास का प्रयोग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में करना है।

समाज शिल्पी दंपत्ति प्रभारी श्री हरीराम सोनी ने कहा कि समाज की बुराइयों को खत्म करना है तथा दीनदयाल शोध संस्थान की शिक्षा को आगे बढ़ाना है। स्वावलंबन अभियान के प्रभारी डॉ. अशोक पाण्डेय ने छात्रों द्वारा टेक्निकल कोर्सों के भविष्य में सम्भावनाओं के बारे में बताया। डीआरआई के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र सिंह ने कहा कि दीनदयाल शोध संस्थान के छात्र एवं कार्यकर्ता को लालटेन की तरह होना चाहिए जिसमें तेल बाती एवं कांच यह तीन चीज आवश्यक है उन्होंने कहा तेल हमारी ऊर्जा है। बाती की तरह विद्यालय है एवं कांच की तरह छात्र है। छात्रों को लालटेन की तरह जलकर दूसरों को प्रकाशित करना चाहिए।

शैक्षणिक अनुसंधान केंद्र के संयोजक श्री कालिका प्रसाद श्रीवास्तव ने छात्रों को अपने मार्ग दर्शन में कहा कि अपने लक्ष्य के प्रति सर्मपण धैर्य एवं कड़ी मेहनत होनी चाहिए।

शैक्षणिक अनुसंधान केंद्र के संयोजक श्री कालिका प्रसाद श्रीवास्तव ने छात्रों को अपने मार्गदर्शन में कहा कि अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण धैर्य एवं कड़ी मेहनत होनी चाहिए तथा विद्यालय द्वारा प्राप्त शिक्षा को समाज में फैलाना चाहिए। जीवन का लक्ष्य सामाजिक कार्यों को करते रहना चाहिए। कार्यक्रम के अन्त में रामनाथ आश्रमशाला के सचिव डॉ. अमरजीत सिंह ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य नौकरी को प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। हमें समाज में अच्छी गतिविधियों का संचालन करना चाहिए। विद्यालय के प्राचार्य श्री सत्यराम यादव ने आये हुए अतिथियों का आभार प्रदर्शन किया एवं छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

सुरेन्द्रपॉल ग्रामोदय विद्यालय में वार्षिक गृह परीक्षा परिणाम की घोषणा तथा मेधावी छात्र सम्मान समारोह

बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु वाहन शुल्क में 50% की छूट का निर्णय

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित सुरेंद्रपाल ग्रामोदय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में वार्षिक गृह परीक्षा परिणाम की घोषणा तथा मेधावी छात्र सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे हुए महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो भरत मिश्रा ने बच्चों को पुरस्कार देते हुए उनके मंगलमय भविष्य की कामना की। गायत्री शक्तिपीठ के व्यवस्थापक डॉ. राम नारायण त्रिपाठी ने भी बच्चों के उत्साह में प्रेरक प्रसंग के माध्यम से उन्हें प्रोत्साहन दिया। इस अवसर पर दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन की भी गरिमामयी उपस्थिति रही।

श्री महाजन ने बच्चों को संबोधित करते हुए उनके मंगलमय भविष्य की कामना की। उन्होंने बताया कि बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए संस्थान ने यह निर्णय किया है कि उनके वाहन शुल्क में 50% की छूट दी जाएगी यह आगामी सत्र से लागू भी हो जाएगा। छात्र/छात्राओं को कक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर, कक्षा में सर्वाधिक अनुशासित छात्र के रूप में अपना नाम दर्ज करने पर तथा कक्षा में सर्वाधिक उपस्थिति दर्ज करने के लिए मंच से पुरस्कृत किया गया। इसके साथ सत्र 2023-24 में आयोजित होने वाली विद्यालय स्तर की लगभग 17 प्रतियोगिताओं के 400 से अधिक प्रतिभागी विजेता बालक बालिकाओं को भी पुरस्कार दिया गया।

कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के व्याख्याता श्री अशोक दीक्षित ने किया। इससे पूर्व विद्यालय के प्राचार्य श्री मदन तिवारी ने विद्यालय का परीक्षा फल एक दृष्टि में सभी के सम्मुख रखा। इस अवसर पर विद्यालय के सचिव डॉ. अशोक पांडेय, विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अंशुमान पाठक तथा वरिष्ठ व्याख्याता श्री जितेंद्र श्रीवास्तव, श्री भुवनेश मिश्रा, श्री रामवीर सक्सेना, श्री शिव शंकर पांडे आदि की उपस्थिति रही।

भूमि के सुपोषण एवं संरक्षण के लिए कार्यक्रमों का आयोजन

किसानों द्वारा खेतों से कलश में मिट्टी भरकर विधिवत पूजन के उपरांत मिट्टी का खेतों में किया गया छिड़काव

भूमि का सुपोषण एवं संरक्षण हम सभी भारतीयों का सामूहिक उत्तरदायित्व – श्री अभय महाजन

गनीवां/भारतीय कृषि चिंतन में भूमि को धरती माता जैसे संबोधित किया है। हमारे प्राचीन ग्रंथो में इसके उदाहरण सहजता से पाए जाते हैं। अथर्ववेद के भूमि सूक्त में कहा गया है, 'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।' इसका भावार्थ है कि भूमि हमारी माता है एवं हम उसके पुत्र। तात्पर्य, भूमि के पोषण की व्यवस्था करना हमारा कर्तव्य है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर चैत्र वर्ष प्रतिपदा गुड़ी पड़वा से चित्रकूट एवं मझगवां जनपद के ग्रामों में दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा भूमि सुपोषण कार्यक्रमों का आयोजन क्रमशः किया जा रहा है। इसी के अन्तर्गत चित्रकूट जनपद के ग्राम पंचायत कुई के कृषकों एवं महिलाओं द्वारा अपने-अपने खेतों से कलश में मिट्टी भरकर कार्यक्रम स्थल तक लाया गया और वहां उनका विधिवत पूजन कार्यक्रम संपन्न हुआ। पूजन के उपरांत उस मिट्टी का अपने-अपने खेतों में छिड़काव किया गया।

इस कार्यक्रम में कंचन–मंजू, देवमाणी, छेदिलाल ने सपत्नीक जोड़ों के साथ एवं गांव के अन्य परिवार की महिलाएं, पुरुष, बच्चे, बुजुर्ग आदि उपस्थित होकर इस कार्यक्रम में विधि-विधान पूर्वक गौ माता एवं पृथ्वी माता के पूजन में उपस्थित रहे। यह कार्यक्रम पारंपरिक लोक रीतियों को प्रकृति परंपरा से जोड़ते हुए हमारे दैनिक जीवन में उसके महत्व एवं उपयोग की व्याख्या करते हुए संपन्न किया गया।

कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक श्री विजय गौतम के द्वारा भूमि सुपोषण शब्द का शाब्दिक अर्थ समझाते हुए भूमि की उर्वरा शक्ति एवं किए जाने वाले भूमि संरक्षण हेतु आवश्यक प्रयासों के बारे में विस्तृत जानकारी बताई गई साथ ही इसके साथ पारंपरिक रीतियों एवं उनके महत्व के बारे में भी बताया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन उपस्थित रहे।

दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि संस्थान के कार्यकर्ता प्रत्येक ग्राम स्तर तक जाकर इस कार्यक्रम में ग्रामीणों की सहभागिता सुनिश्चित कर रहे हैं। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारतीय कृषि चिंतन, भूमि सुपोषण एवं संरक्षण इन संकल्पनाओं को कृषि क्षेत्र में पुनःस्थापित करना है। जन अभियान में प्राधान्यतः भूमि सुपोषण, जन जागरण एवं भारतीय कृषि चिंतन एवं भूमि सुपोषण को बढ़ावा देने संबंधित कार्यक्रम किए जा रहे हैं।

श्री महाजन ने कहा कि हमारी भूमि का सुपोषण करना यह मात्र कृषकों का उत्तरदायित्व नहीं है। इस जन अभियान की मुख्य संकल्पना है कि भूमि सुपोषण एवं संरक्षण यह हम सभी भारतीयों का सामूहिक उत्तरदायित्व है। इसी के साथ आगामी आने वाले मतदान में शत प्रतिशत मतदान करने एवं करवाने के लिए अपील भी की गई। इस दौरान गत दिनों ग्राम की कुछ महिलाओं के द्वारा पूर्व में जिला स्तरीय खाद्य प्रसंस्करण के अंतर्गत "श्री अन्न" से बने हुए उत्पादों की प्रदर्शनी में जिला स्तरीय प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था, जिसको केंद्र की गृह विज्ञान वैज्ञानिक श्रीमती ममता त्रिपाठी एवं श्री अभय महाजन के द्वारा महिलाओं को पुरस्कृत किया गया।

केंद्र के प्रभारी वैज्ञानिक डॉ. कमला शंकर शुक्ला के द्वारा किसानों को भूमि सुपोषण का संकल्प दोहरवा गया, पूजन के पश्चात किसान शेष मिट्टी को अपने अपने घर लेकर गए जिसको वो अपने खेतों मे मिलाकर अपनी भूमि के सुपोषण का संकल्प लेंगे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री भगवानदीन वर्मा निवासी ग्राम कुईं ने की।

इस अवसर पर पर्यावरणविद, विज्ञान भारती, जबलपुर के संरक्षक श्री संत कुमार गौतम, श्री अंकित राय एवं श्री आदित्य विवश्वान उपस्थित रहे। केंद्र से प्रमुख रूप से डॉ. मनोज शर्मा, श्री अभय शुक्ला सहित कृषि विज्ञान केंद्र के कार्यकर्ता और प्रमुख गांव वासी 57 महिला पुरुष किसान सम्मिलित रहे।

जन शिक्षण संस्थान द्वारा राजापुर में सामाजिक समरसता दिवस के रूप में मनाई गई डॉ. अंबेडकर जयंती

चित्रकूट/कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित तथा दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित जन शिक्षण संस्थान द्वारा संविधान निर्माता व शिल्पकार तथा देश के दलित एवं पिछड़े वर्ग के लोगों के मसीहा डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती एवं भूमि सुपोषण जागरूकता कार्यक्रम राजापुर में मनाया गया।

कार्यक्रम में जेएसएस की प्रबंध समिति सदस्या श्रीमती बबीता सिंह ने कहा कि बाबा साहब के नाम से मशहूर डॉ. अंबेडकर ने अपना संपूर्ण जीवन भारतीय समाज के पिछड़ों, दलितों एवं गरीबों के उत्थान के लिए न्योछावर कर दिया वह एक प्रख्यात अर्थशास्त्री, कानूनविद एवं राजनेता थे उन्होंने सिर्फ सामाजिक न्याय व सामाजिक असमानता के खिलाफ ही लड़ाई नहीं लड़ी बल्कि उन्होंने महिला सशक्तिकरण, महिलाओं को बराबरी का अधिकार, जनसंख्या नियंत्रण एवं मौलिक दायित्वों की बात की। वह अपने प्रगतिशील विचारों के कारण आज भी करोड़ों भारतीयों के प्रेरणा स्रोत है।

सहायक परियोजना समन्वयक श्री प्रभाकर मिश्र ने कहा कि डॉ. अंबेडकर का नारा था शिक्षित बनों, संगठित रहो और संघर्ष करो।

भूमि सुपोषण जागरूकता अभियान के विषय में वक्ता के रूप में बोलते हुए निदेशक श्री अनिल कुमार सिंह ने कहा कि सदियों से हम भारतीयों का प्रकृति के साथ गहरा संबंध रहा है। हजारों वर्षों से हम भारतीय कृषि कार्य करते आ रहे हैं और हम मानते हैं कि कृषि मात्र व्यवसाय नहीं एक जीवन पद्धति है। भूमि संरक्षण हेतु हम विविध उत्सव एवं त्योहार आज भी मनाते हैं। भूमि का समुचित उपयोग एवं उसका संरक्षण तथा संवर्धन करना केवल कृषकों का नहीं, वरन हम सभी का सामूहिक उत्तरदायित्व है। भूमि सुपोषण एवं संरक्षण के इस राष्ट्रीय अभियान में हम सभी हिस्सा बने और अपनी धरती माता का संरक्षण संवर्धन कर उसे उपजाऊ बनाए रखें।

कार्यक्रम का संचालन श्री जितेंद्र सिंह ने तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री सत्येंद्र सिंह ने किया।

11 लाख दीपों से जगमग हुआ चित्रकूट दुल्हन की तरह सजा रामघाट

राम नवमी पर चित्रकूट गौरव दिवस के उपलक्ष्य में आस्था के दीपों से जगमगा उठी धर्म नगरी

चित्रकूट धाम/कौशल्या नंदन श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने वाली उनकी तपोभूमि चित्रकूट उनके अवतरण दिवस पर 11 लाख दीपों के प्रकाश से जगमगाई। पौराणिक- धार्मिक माहात्म्य को अपने आंचल में समेटे रहने वाली धर्मनगरी की छटा दीपों के प्रकाश के बीच अलौकिक नजर आई।

घाटों पर झिलमिलाते दीपक और मंदाकिनी के जल पर दिखाई पड़ रही उनकी प्रतिकृति देख कर दृश्य ऐसा अद्भुत लगा मानों लाखों तारे मंदाकिनी के जल पर उतर आए हों।

रंग बिरंगी लाइट तथा दीप ज्योति से यह मनोरम साज सज्जा श्रीराम नवमी पर मनाए जाने वाले चित्रकूट गौरव दिवस के उपलक्ष्य में की गई थी। चित्रकूट नगर परिषद और स्थानीय संस्थाओं, मठ मंदिरों तथा आम जन सहयोग से किए गए चित्रकूट नगर गौरव दिवस के आयोजन में चित्रकूट के मठ-मन्दिर, घाट, सड़कों और गली - चौबारों को सजाया गया था।

विश्व प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र चित्रकूट में इस बार रामनवमी महोत्सव का भव्य आयोजन श्रद्धालुओं को गदगद कर गया। हालांकि रामनवमी महोत्सव पिछले कई वर्षों से धर्मनगरी में मनाया जा रहा है। लेकिन इस बार शासन के प्रयासों और संत समाज एवं क्षेत्र के समाजसेवियों के साथ मिलकर श्रद्धालुओं ने इसको ऐतिहासिक रूप दे दिया। धर्म नगरी में जन सहभागिता से इस तरह का यह तीसरा आयोजन था, जिसमें समाज की पहल पर सरकार की भी सहभागिता रही, और दोनों राज्यों का प्रशासन पूरी मुस्तैदी से जुटा रहा।

पवित्र एवं धार्मिक नगरी चित्रकूट का गौरव दिवस मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम के प्राकट्य दिवस रामनवमी के दिन 17 अप्रैल को मनाया गया। गौरव दिवस के अवसर पर शासन-प्रशासन एवं संत महात्माओं तथा समाज के सहयोग से पूरे चित्रकूट शहर के प्रमुख स्थानों पर 11 लाख दीप प्रज्ज्वलित किये गए, जिससे पूरा चित्रकूट जगमगा गया। एक साथ 11 लाख दीपक रोशन करने के लिए जहां तमाम संगठनों - संस्थाओं के सहयोगी लगे थे, वहीं आम जन भी उत्साह के साथ सहभागिता कर रहे थे।

हर खास और आम चित्रकूट गौरव दिवस के उपलक्ष्य में भगवान श्रीराम के नाम दीप प्रज्ज्वलित करने को उत्साहित

नजर आ रहा था। कोई दीपों को सजा कर राम नाम लिख रहा था तो कोई किसी तस्वीर को आकार दे रहा था। किसी ने दीप सजाने की जिम्मेदारी ले रखी थी तो कोई दीपों में बाती और तेल का इंतजाम कर रहा था।

चित्रकूट तीर्थ स्थान पर यूपी व एमपी सीमा में दोनों जिला प्रशासन के सहयोग से विभिन्न संस्थान के कार्यकर्ता व मठमंदिरों ने सहयोग किया। परिक्रमा मार्ग में कामदगिरी प्रमुख द्वार पीठाधीश्चार श्रीराम स्वरूपाचार्य व संत मदन गोपालदास सहित अन्य संतों के नेतृत्व में दीप जलाए गए। इसी तरह से गायत्री शक्तिपीठ के डा. रामनारायण त्रिपाठी व कार्यकर्ताओं ने भी दीप जलाए। सदगुरु सेवा संघ ट्रस्ट, महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, कांच मंदिर, जगतगुरु रामभद्राचार्य राज्य दिव्यांग विश्वविद्यालय सहित धर्म नगरी के बस्ती के निवासियों ने भी अपने अपने घरों में दीप जलाए। जिसमें एमपी क्षेत्र में दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने दीप जलाए। सबसे अधिक मंदाकिनी नदी के तट पर रामघाट व भरत घाट में दीप जलाए गए।

बता दें कि श्रीराम नवमी पर चित्रकूट नगर गौरव दिवस मनाए जाने की शुरुआत पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने दो वर्ष पूर्व कराई थी। पहली बार आयोजित हुए कार्यक्रम में वे स्वयं सपत्नीक शामिल हुए थे।

दीनदयाल शोध संस्थान ने किये 1 लाख 1 हजार दीप प्रज्ज्वलित

सभी संस्थाओं, मंदिर, आश्रमों, कार्यालयों को दीप प्रज्ज्वलित करने के लक्ष्य निर्धारित किए गए थे जिसमें से दीनदयाल शोध संस्थान को 1 लाख 1 हजार दीप प्रज्ज्वलन का लक्ष्य था। डीआरआई के द्वारा सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय गेट व राम दर्शन से लेकर उद्यमिता विद्यापीठ, आरोग्य धाम गेट तक तथा पंचवटी घाट, आरोग्यधाम परिसर, सियाराम कुटीर सहित रामनाथ गोयनका घाट, रामनाथ आश्रमशाला परिसर, बाल्मीकि परिसर मझगवां, तुलसी परिसर गनीवां पर 1 लाख से अधिक दीप प्रज्ज्वलित किये गए, जिसके लिए संस्थान के लगभग 500 कार्यकर्ता अपने पूरे परिवार सहित चिन्हित स्थानों पर शाम 5 बजे से ही तैयारी में जुट गए थे। पूर्व निर्धारित समयानुसार सांय 7 बजे से दीप प्रज्ज्वलित होना शुरू हो गये।

गुरुकुल संकुल

दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट सतना (मध्य प्रदेश)

(**ISO** 9001:2008)

बालकों के लिए शैक्षणिक व्यवस्था युक्त आवासीय परिसर
शिक्षित वानप्रस्थी दंपतियों की आवश्यकता है।

जिनकी अहर्ताएं निम्नलिखित हैं :-

- दंपति को शिक्षित, ऊर्जावान, संवेदनशील एवं सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पित होना चाहिए।
- दंपति की आयु लगभग 60 वर्ष की होनी चाहिए और शारीरिक, मानसिक रूप से स्वस्थ एवं पारिवारिक दायित्व से मुक्त हो।
- कक्षा 6 से 12 तक को कम-से-कम एक विषय में शिक्षण की योग्यता रखते हों। शिक्षकों को इस हेतु वरीयता दी जाएगी।
- प्रत्येक दंपति की भोजन एवं आवासीय व्यवस्था संस्थान निःशुल्क करेगा, इसके अतिरिक्त संस्थान के नियमों के अंतर्गत मानदेय भी दिया जाएगा।
- शैक्षणिक योग्यता की छाया प्रतियों के साथ आवेदन पत्र सादे पृष्ठ पर निम्नलिखित पते पर भेजें।

—: प्रभारी : —

गुरुकुल संकुल, दीनदयाल शोध संस्थान

चित्रकूट, जिला सतना (म.प्र.) दूरभाष : 07670-265353, 265528

ईमेल : drichitrakoot@chitrakoot.org

आरएनआई नं. दिल्ली-एन/2002/7201

मध्यप्रदेश शासन

मोदी जी की गारंटी

यानी गारंटी पूरी होने की गारंटी

"हर संकल्प पूरा करने को प्रतिबद्ध" - डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश संकल्प पत्र 2023 में उल्लेखित कुछ प्रमुख संकल्प

सशक्त नारी

- पात्र बहनों को आर्थिक सहायता एवं पक्का आवास
- 15 लाख महिलाओं को लखपति योजना में कौशल प्रशिक्षण देकर बनायेंगे लखपति
- लाड़ली लक्ष्मियों को 21 वर्ष तक कुल ₹ 2 लाख
- पात्र बहनों को ₹ 450 में गैस सिलेण्डर
- बीपीएल परिवार की बेटियों को केजी से पीजी तक मुफ्त शिक्षा

समृद्ध किसान

- किसानों को पीएम किसान एवं मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना में ₹ 12,000 की प्रतिवर्ष सहायता
- ₹ 2700 प्रति क्विंटल गेहूं एवं ₹ 3100 प्रति क्विंटल धान की खरीद, बोनस भी

जनजातीय कल्याण

- ₹ 3 लाख करोड़ से जनजातीय समुदाय का सशक्तिकरण
- तेंदूपत्ता संग्रहण दर बढ़कर होगी ₹ 4,000 प्रति बोरा
- हर एसटी ब्लॉक में एकलव्य विद्यालय
- एसटी बहुल मंडला, खरगोन, धार, बालाघाट एवं सीधी जिले में मेडिकल कॉलेज की स्थापना
- ₹ 100 करोड़ से पूजा स्थलों का विकास एवं नवीनीकरण

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

सुशासन एवं कानून व्यवस्था

- कमिश्नर प्रणाली भोपाल एवं इंदौर के बाद जबलपुर और ग्वालियर में होगी लागू
- भोपाल में राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय का निर्माण

सबका साथ, सबका विकास

- 5 वर्षों तक मिलता रहेगा प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना का लाभ
- प्रधानमंत्री आवास योजना के साथ ही मुख्यमंत्री जन आवास योजना में पक्के आवास
- वरिष्ठ एवं दिव्यांग जन को ₹ 1500 मासिक पेंशन
- गिग वर्कर्स के कल्याण एवं अधिकारों के लिए बोर्ड
- पीएम विश्वकर्मा योजना में पारंपरिक कारीगरों को ₹ 15 हजार की वित्तीय सहायता, ₹ 500 दैनिक भुगतान
- असंगठित श्रमिकों के लिए ई-श्रम पोर्टल, आयुष्मान भारत का 100% पंजीकरण

उत्तम शिक्षा एवं सक्षम युवा

- गरीब परिवारों के छात्रों को कक्षा 12 तक मुफ्त शिक्षा
- मिड-डे मील के साथ पौष्टिक नाश्ता भी
- हर संभाग में IIT की तर्ज पर मध्यप्रदेश इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
- हर परिवार में कम से कम एक युवा को रोज़गार-स्वरोज़गार
- मुख्यमंत्री सीखो कमाओ योजना में कौशल प्रशिक्षण एवं ₹ 10 हजार तक स्टाइपेंड
- हर जिले में एक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स

स्वस्थ प्रदेश

- आयुष्मान योजना में ₹ 5 लाख से ऊपर खर्च होने पर प्रदेश सरकार उठाएगी इलाज का खर्च
- ₹ 20,000 करोड़ से सुचारु होंगी स्वास्थ्य सुविधाएं
- हर संभाग में एम्स की तर्ज पर मध्यप्रदेश इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस की स्थापना
- हर संसदीय क्षेत्र में मेडिकल कॉलेज एवं 2,000 मेडिकल सीटों की वृद्धि

सुदृढ़ आधारभूत संरचना

- क्षेत्रीय विकास के लिए बुंदेलखंड, विंध्य एवं महाकौशल विकास बोर्ड
- अटल गृह ज्योति योजना में ₹ 100 में 100 यूनिट बिजली
- विंध्य एक्सप्रेसवे, नर्मदा पथ, अटल प्रगति पथ, मालवा-निमाड़ पथ, बुंदेलखंड पथ एवं मध्य भारत विकास पथ का निर्माण
- 80 रेलवे स्टेशनों का विश्वस्तरीय आधुनिकीकरण
- वंदे मेट्रो एवं वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों का विस्तार
- रीवा, सिंगरौली एवं शहडोल में हवाई अड्डे
- भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर में मेट्रो रेल

सांस्कृतिक धरोहर एवं विकसित पर्यटन

- संत शिरोमणि गुरुदेव श्री रविदास जी का स्मारक निर्माण एवं ₹ 150 करोड़ से धरोहर संरक्षण मिशन शुरु करके ऐतिहासिक स्मारकों का नवीनीकरण
- सभी जनजातीय नायकों के भव्य स्मारकों का निर्माण
- 13 सांस्कृतिक लोकों का निर्माण
- नमामि नर्मदे परियोजनाएं शीघ्र होंगी पूर्ण
- ₹ 7,500 करोड़ के निवेश के साथ 2 लाख युवाओं को पर्यटन के क्षेत्र में प्रशिक्षण, रोज़गार तथा स्वरोज़गार के अवसर

प्रगतिशील अर्थव्यवस्था एवं औद्योगिक विकास

- अगले 7 वर्ष में प्रदेश को ₹ 45 लाख करोड़ की अर्थव्यवस्था बनायेंगे
- ₹ 20 लाख करोड़ का निवेश लाकर प्रति व्यक्ति आय करेंगे दोगुनी
- एक्सप्रेस-वे के पास औद्योगिक कॉरिडोर का निर्माण कर 4.50 लाख से अधिक युवाओं को रोज़गार और स्वरोज़गार के अवसर
- 10 नए एमएसएमई क्लस्टरों का निर्माण एवं ₹ 5 हजार करोड़ के निवेश के साथ एमएसएमई उद्योगों को न्यूनतम दर पर ऋण

एमपी के मन में मोदी

सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास